समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

Postal R.No. UA/DO/16/2018-2020
RNI No. 38653/80

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

शक्ति संवर्धन वर्ष

1 जुलाई 2018

वर्ष : 31, अंक : 01
प्रकाशन स्थल : शांतिकुंज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 27 जून 2018
वार्षिक चंदा : ₹ 40/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 500/-
प्रति अंक : ₹ 2/-
ई-मेल : news@awgp.org
news.shantikunj@gmail.com

विश्व पर्यावरण दिवस पर गतिशील हुआ वृक्षगंगा अभियान 3

कन्या कौशल शिविर देवीरूप में पूजा, देवभाव जगाया 5

यूनेस्को और राष्ट्रमंडल में बढ़ता देव संस्कृति विवि. का प्रभाव 7

साकार हो रही है दण्डकारण्य परियोजना

8

शान्तिकुञ्ज दर्शन

युग सृजेताओं की छावनी है शान्तिकुञ्ज

धर्म व्यक्ति को समाजनिष्ठ, सेवाभावी बनाता है। जहाँ धर्म है वहाँ शांति, प्रेम, सुख, सहयोग, चहुमुखी प्रगति और स्वर्ग जैसा वातावरण है। जहाँ अधर्म है वहाँ स्वार्थ, क्लेश, हिंसा, तनाव, असंतोष से त्रस्त समाज है।

शांतिकुंज युगऋषि पं.श्रीराम शर्मा आचार्य जी के मानवमात्र को उज्ज्वल भविष्य प्रदान करने के संकल्प को साकार करने के लिए समर्पित युग सृजेता-युग सैनिकों की छावनी है। यहाँ का कण-कण व्यक्ति को सही अर्थों में धार्मिक बनकर लोकमंगल के लिए जीने की प्रेरणा देता है। आध्यात्मिक जीवन शैली अपनाओ, आत्मबल बढ़ाओ, आत्मविश्वास जगाओ, दकियानूसी परम्पराओं और मूढ़ मान्यताओं को त्यागकर प्रगतिशील विचारों को अपनाओ और अपनी शक्ति-सामर्थ्य का समाज के उत्थान के लिए भरपूर उपयोग करो; यही यहाँ के शिक्षण का सार है।

ईश्वर से याचना-माँगना नहीं, ईश्वर की दी हुई शक्ति-सामर्थ्य को साधना सिखाता है शांतिकुंज। लोभ-मोह के दलदल में फँसकर जीवन बर्बाद करने की अपेक्षा एक चतुर किसान की तरह अपनी सामर्थ्य को समाज रूपी

खेत में बोना और अथाह आत्मसंतोष, लोक सम्मान एवं दैवी अनुग्रह की फसल प्राप्त करना सिखाता है शांतिकुंज।

शांतिकुंज नालंदा-तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों की तरह युग सृजेताओं को गढ़ने वाला प्रशिक्षण केन्द्र है। यहाँ आत्म परिष्कार और लोकमंगल के अनेक विषयों का प्रशिक्षण क्रम अविराम चलता रहता है। यहाँ से प्रशिक्षित युग सृजेता स्वतंत्रता सेनानियों, सरहद पर डटे सैनिकों जैसी भावना के साथ समाज सेवा में संलग्न रहते हैं। लोगों के विचारों में समयानुकूल बदलाव लाकर उन्हें समाज और राष्ट्र के उत्कर्ष में सहयोगी बनाने का प्रयास करते हैं।

शांतिकुंज की प्रेरणा से देश-विदेश में करोड़ों लोग समाज सेवा में संलग्न हैं। उनके संगठित प्रयासों से युवा जागरण, नारी सशक्तीकरण, बाल निर्माण, संस्कार परम्परा का पुनर्जीवन, वृक्षारोपण, आदर्श ग्राम विकास, जल स्रोतों की स्वच्छता, जल संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण, आपदा प्रबंधन जैसे अनेकों अभियान सतत चलते रहते हैं।

शांतिकुंज कोई आम आश्रम या धर्मशाला नहीं, विशिष्ट उद्देश्यों के लिए स्थापित एक चैतन्य तीर्थ है। यहाँ आने वाले परिजन उसके उद्देश्यों को समझें और उसी मानसिकता के साथ लाभ लें। यहाँ की आवास व्यवस्था केवल उन्हीं पूर्व स्वीकृति प्राप्त लोगों के लिए है।

व्यवस्था में सहयोग करें।
पूर्व स्वीकृति लेकर ही आयें।

परिष्कृत होती मान्यताएँ

आदिमकाल से लेकर अब तक मनुष्य ने प्रगति पथ की अनेकों सीढ़ियाँ पार की हैं। इसी के साथ-साथ धर्म का भी विकास होता चला आया है।

दार्शनिक : आदिम काल में आग का गोला सूर्य, आकाश में चमकने वाले चाँद-तारे, बिजली की कड़क, जन्म-मरण जैसी हलचलों को लोगों ने किन्हीं अदृश्य अतिमानवों की करतूत समझा होगा और उनके कोप से बचने के लिए एवं उन्हें सहायक बनाने के लिए पूजा उपक्रम का कुछ ढंग सोचा होगा। संभवतः यहीं से उपासनात्मक अध्याय का आरंभ हुआ है।

एकाकी स्वेच्छाचार ने जब समूह में रहने की प्रवृत्ति अपनाई होगी तो आचारसंहिता की आवश्यकता पड़ी होगी अन्यथा सहयोग का अभिवर्धन और टकराव का समाधान ही संभव न होता। धर्म यहीं से चला है।

भय के बाद लोभ की प्रवृत्ति पनपी। उसने अतिमानवों से, देवताओं से अभीष्ट लाभ पाने की आशा रखी होगी। मनुष्य की आकांक्षाएँ बढ़ीं और साधन सीमित रहे। ऐसी परिस्थितियों में किन्हीं अदृश्य अतिमानवों का, देवमानवों का पल्ला पकड़ना उसने उचित समझा होगा। संयोगवश जो भले-बुरे अवसर आते गये उन्हें दैवकृत माना जाता रहा। उनके कोप से बचना और प्रसन्न करके लाभान्वित होना तब एक दिव्य कौशल रहा होगा। उन्हीं दिनों मंत्र-तंत्र के देव-परिकर के रूप में विधान गढ़े गये।

भय और लोभ की व्यक्तिवादी आकांक्षाओं से बढ़कर मनुष्य अधिकाधिक समाज पर निर्भर होते चलने की स्थिति में यह समझने के लिए बाध्य हुआ कि समूहगत हलचलें मनुष्य को अधिक प्रभावित करती हैं। अतएव व्यक्ति और समाज की नीति-मर्यादाओं को अधिक सबल, अधिक परिष्कृत बनाया जाय। इस मान्यता ने नीति के, उपकार के तत्त्वज्ञान को धर्म में सम्मिलित किया और इसके लिए आचारशास्त्र का विकास हुआ। यह और भी अधिक महत्त्वपूर्ण कदम था।

इससे आगे ब्रह्मविद्या का युग है। एक ही आत्मा सब में समायी हुई है, सब में अपनी ही सत्ता जगमगा रही है, अपने भीतर सब है, सब में एक ही आत्मा का प्रतिबिम्ब है। यह विश्व मानव की, विश्व परिवार की एकात्म, अद्वैत बुद्धि सचमुच धर्म की अद्भुत और अति उपयोगी देन है।

सामाजिक : कोई देश अपने पड़ोसियों के कारण ही नहीं, दूर देशों की आन्तरिक परिस्थितियों के कारण भी प्रभावित होता है।

व्यक्ति की प्रगति और अवगति अब उसके निजी पुरुषार्थ पर निर्भर नहीं, वरन सामाजिक परिस्थितियाँ उसे बनने, बदलने के लिए विवश करती हैं। व्यक्ति पूरी तरह समाज-यंत्र का पुर्जा मात्र बन गया है। इन परिस्थितियों में यदि व्यक्ति को समाजनिष्ठ बनने के लिए कहा जाय, उसे अपनी प्रगति, अवगति को समाज के उत्थान-पतन के रूप में जोड़ने के लिए कहा जाय तो यह सर्वथा उचित और सामयिक है।

जो परिस्थितियाँ आज अनिवार्य हो गई हैं, कुछ समय पहले ही उनकी सम्भावना दूरदर्शियों ने भाँप ली थी और धर्म एवं अध्यात्म को अधिकाधिक समाजनिष्ठ बनाना आरम्भ कर दिया गया था। अहंकार को, स्वार्थ को, परिग्रह को, तृष्णा-वासना को त्यागने के लिए कहने का तात्पर्य व्यक्तिवाद की कड़ी पकड़ से अपनी चेतना को मुक्त करना ही हो सकता है। सेवा, परोपकार, जन-कल्याण, दान-पुण्य, त्याग-बलिदान के आदर्श मनुष्य को समाजनिष्ठ बनाने के लिए विनिर्मित हुए हैं। मनुष्य में संयम की, तप की, तितीक्षा की, पवित्रता की, मितव्ययिता की, शालीनता की, सज्जनता की, संतोष और शान्ति की वे धाराएँ सम्मिलित की गई हैं, जो उसके अपने लिए अपनी शक्तियों का न्यूनतम भाग खर्च करने की प्रेरणा देती हैं और तन-मन, धन का जो भाग इस नीति को अपनाने के कारण बचा रहता है उसे जनकल्याण में खर्च करने की ओर धकेलती हैं।

ईश्वर आस्था : ईश्वर का स्वरूप भी अब भयंकर, वरदाता, नीति-निर्देशक की क्रमिक भूमिका से आगे बढ़ते-बढ़ते इस स्थिति पर आ पहुँचा है कि हम विराट् ब्रह्म के, विश्व दर्शन के रूप में उसकी झाँकी कर सकें और श्रद्धा-विश्वास जैसे उत्कृष्ट चिन्तन को भवानी-शंकर की उपमा दे सकें। अग्निहोत्र की व्याख्या यदि जीवनयज्ञ के, सर्वमेध के साथ जोड़ी जाने लगी है, तो यह अत्यन्त ही सामयिक परिभाषा का प्रस्तुतीकरण है। क्रिया-काण्ड को यदि भाव परिष्कार का प्रतीक-संकेत कहा जाय तो वस्तुतः यह प्राचीन ईश्वर की परिष्कृत चेतना भी कहा जायेगा।

अब प्रसाद खाकर या प्रशंसा सुनकर प्रसन्न होने वाले ईश्वर का रूप बदल रहा है। प्रतिमाओं का दर्शन करने, नदी, तालाबों में नहाने, मंत्र के जपोच्चार से, चित्र-विचित्र कर्मकाण्डों से अब ईश्वर के प्रसन्न होने की बात पर केवल बहुत पिछड़े लोग ही विश्वास करते हैं।

आदिम ईश्वर सर्वतन्त्र स्वतन्त्र था, जिस पर प्रसन्न हो उसे लाभ देना और जिस पर अप्रसन्न हो उसे हानि पहुँचाना ही उसका काम था। मनुष्यों से वह भेंट, पूजा और स्तवन की आकांक्षा करता था। पुरोहित वर्ग उसका एजेंट था। उन्हें प्रसन्न करना ही प्रकारान्तर से ईश्वर को प्रसन्न करना था।

अब का ईश्वर एक नियम है। उसने समस्त जड़-चेतन को संसम्बद्ध नियंत्रण में जकड़ा है, यहाँ तक कि अपने को भी कायदे-कानून के बंधनों में बाँध लिया है। आधुनिक ईश्वर की झाँकी स्थूल शरीर में सत्कर्म के रूप में और मन में सद्भावों के रूप में की जाने लगी है। परिष्कृत व्यक्तियों की गणना दैवी अथवा अवतार के रूप में की जाने लगी है। यह शुभ चिह्न है।

अगले दिनों होगा

सर्वमान्य ईश्वर एवं सर्वसमर्थित पूजा विधान

एकता-समता की ओर

धर्म और ईश्वर जिस क्रम से विकास पथ पर चल रहे हैं, उसे देखते हुए अगले दिनों नास्तिक और आस्तिक का झगड़ा दूर हो जायेगा। धर्म और विज्ञान के बीच जो विवाद था, उसका हल निकल आयेगा। साम्प्रदायिक विद्वेष की भी गुंजायश न रहेगी। पिछले और पिछड़े सम्प्रदाय अपने-अपने ईश्वरों के अलग-अलग आदेशों को पृथक प्रथा- परम्पराओं के रूप में मानते थे और मतभेद रखने वालों को तलवार के घाट उतारते थे। अब वैसी गुंजाइश नहीं रहेगी। सद्भावना एवं सज्जनता की परिभाषाएँ यों अभी भी कई तरह की जाती हैं, पर उनमें इतना अधिक मतभेद नहीं है, जिनका समन्वय न किया जा सके।

दुनिया अब एक धर्म, एक आचार, एक संस्कृति, एक राष्ट्र, एक भाषा के आधारों को अपनाकर एकता की ओर चल रही है। ऐसी दशा में एक सर्वमान्य ईश्वर और उसका एक सर्वसमर्थित पूजा-विधान भी होना ही चाहिए। अब इस दिशा में आशाजनक स्थिति उत्पन्न होने जा रही है। धर्म और कर्म का मर्म समझने वाले ब्रह्मपरायण व्यक्ति ईश्वर को निर्विवाद स्थिति तक पहुँचाकर ही रहेंगे।

युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य । वाङ्मय- .53 'धर्म तत्व का दर्शन और मर्म', पृष्ठ 1.111 से संकलित, संपादित

वर्षाकाल में वृक्षारोपण अभियान को तत्परतापूर्वक तीव्र गति दी जाय

मौसम की अनुकूलता एवं पर्वों की प्रेरणा की सुसंगति बिठाई जाय

चिंताजनक समस्या का उपचार

पर्यावरण प्रदूषण चिंताजनक स्थिति तक पहुँच गया है। बढ़ती आबादी और बढ़ती औद्योगिक इकाइयों के कारण तमाम कोशिशें करने पर भी प्रदूषण पैदा करने वाले स्त्रोतों पर नियंत्रण हो नहीं पा रहा है। दिल्ली सहित भारत के अनेक शहरों में प्रदूषण का प्रतिशत जान लेवा स्थिति तक पहुँच गया है। वृक्ष निश्चित रूप से पर्यावरण प्रदूषण के स्तर में कमी ला सकते हैं, किन्तु उनकी संख्या भी भारत में बहुत घट गई है। एक सर्वेक्षण के अनुसार विभिन्न देशों में प्रति व्यक्ति वृक्षों की संख्या इस प्रकार है :-

ग्रीन विजार्ड न्यूज़ लैटर के अनुसार आँकड़े

देश	प्रतिव्यक्ति वृक्ष	देश	प्रतिव्यक्ति वृक्ष
कनाडा	9959	रशिया	4461
ब्राज़ील	1494	यू.एस.	716
चाइना	102	भारत	28

वास्तव में ये आँकड़े चौंकाने वाले और चिंताजनक हैं। जो भारतवासी वृक्ष-वनस्पतियों की पूजा करते हैं, वे उनके संबंध में इतने संवेदनहीन और गैर जिम्मेदार कैसे हो गए?

समस्याओं पर चर्चा भर करते रहने से उनके समाधान नहीं निकलते। उसके लिए तो नैष्ठिक प्रयास पूरी तत्परता और तन्मयता के साथ करने पड़ते हैं। युग निर्माण योजना के अन्तर्गत, गायत्री परिवार संगठन ने इसी लिए पर्यावरण संरक्षण को अपने प्रमुख आन्दोलनों में शामिल किया है। इसके अंतर्गत स्वच्छता के प्रति जागरूकता लाने, ठोस अपशिष्टों के पुनर्चक्रण की व्यवस्था बनाने, यज्ञ करने-कराने आदि प्रयोगों के साथ 'हरीतिमा संवर्धन' कार्यक्रम को भी जीवन्त रूप दिया है। यों तो इसके लिए प्रयास वर्षभर चलते रहते हैं, किन्तु वर्षाकाल इसके लिए सबसे अनुकूल समय होता है। इस वर्ष भी हमें संकल्पपूर्वक सुनिश्चित लक्ष्य बनाकर इस अभियान को तेजस्वी रूप देना है। गायत्री जयंती से लेकर शारदीय नवरात्र तक वृक्षारोपण, हरीतिमा सवंर्धन के लिए प्रकृति की अनुकूलता का पूरा-पूरा लाभ उठाने के प्रयास करने चाहिए।

जनभागीदारी बढ़ायें

किसी भी आन्दोलन को विस्तार और मजबूती देने के लिए उसमें जन-जन की भावभरी भागीदारी अत्यंत आवश्यक है। अभी तक के सफल प्रयोगों के पीछे पहल करने वाले प्राणवान परिजनों के साथ ही जनभागीदारी निभाने वाले भावनाशीलों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इसी सुसंगति के कारण परिजनों ने देश के विभिन्न भागों में अनेक कीर्तिमान स्थापित किए हैं। उनके विवरण समय-समय पर पाक्षिक में छपते भी रहते हैं। इस दिशा में प्रयास बराबर करते रहना है।

जनसामान्य को हरीतिमा संवर्धन में भागीदार बनने की प्रेरणा देने के लिए वैज्ञानिक आँकड़ों के माध्यम से संकट की भयावहता का बोध कराना भी उपयोगी है। उसके साथ ही इस अभियान से जन-जन को जोड़ने के लिए उनमें भावनात्मक संवेदना जगाना और भी अधिक उपयोगी होता है। नीचे दिए गये पद के भावों को जनमानस में बिठाकर उन्हें भागीदार बनाने में अच्छा योगदान मिल सकता है।

वृक्ष बने ब्रह्मा के साथी, रचते हैं भू पर जीवन।
और विष्णु के संगी बनकर, करते हैं पालन-पोषण।।
यही सदाशिव रूप लोकहित, विषपायी बन जाते हैं।
इंद्रदेव की तरह मेघ से वर्षा भी करवाते हैं।।
ऋषि दधीचि की तरह विश्वहित अस्थिदान कर देते हैं।
इन्हें उगाओ-संरक्षण दो, ये अनुपम वर देते हैं।।

हरीतिमा संवर्धन के कार्यक्रमों में इन भावों को बैनरों पर छापा भी जा सकता है और गाया भी जा सकता है।

सटीक व्यवस्था बनायें

जनमानस में प्रेरणा भरने से अनेक भावनाशील उसमें भागीदारी के लिए उत्साहित होते हैं। उन्हें संकल्पित कराने के साथ-साथ संकल्प पूर्ति में आवश्यक सहयोग देने का व्यवस्थित तंत्र भी बनाया जाना चाहिए। जैसे :-

उपयुक्त पौध :- क्षेत्र विशेष में सहजता से पनपने वाले उपयोगी वृक्षों की पौध उपलब्ध रहनी चाहिए। इस कार्य में कुशल व्यक्तियों से पौध तैयार कराकर, वन विभाग की पौधशालाओं से संगति बिठाकर उन्हें उपलब्ध कराया जा सकता है। सम्पन्न भावनाशील लोग अपनी तरफ से पौध उपलब्ध कराने के लिए आगे आ सकते हैं।

उपयुक्त क्षेत्र :- वृक्षारोपण करने-कराने के लिए उपयुक्त भूमि पर भी दृष्टि रखनी चाहिए। जैसे :-

- ग्राम पंचायतों के अधिकार में खाली पड़ी भूमि।
- आश्रमों, स्कूल-कॉलेजों में उपलब्ध भूमि।
- सड़कों, रेलवे लाइनों, नदियों, जलस्त्रोतों के किनारे उपलब्ध खाली क्षेत्र।
- ऊबड़-खाबड़, बंजर भूमि, छोटी-छोटी पहाड़ियाँ।
- व्यक्तिगत भवनों, खेतों, आहातों आदि में उपयुक्त स्थान।

जहाँ वृक्षारोपण न हो सकें वहाँ फूलवाले पौधे, तुलसी, आज्ञाघास, मेंहदी, मीठी नीम जैसे उपयोगी पौधे भी लगाये जा सकते हैं। यह भी पर्यावरण शोधन तथा आरोग्य संवर्धन के लिए उपयोगी हैं।

उपयुक्त अवसर :- हरीतिमा संवर्धन के लिए लोगों को संकल्पित तो कभी भी कराया जा सकता है, किन्तु विशेष अवसरों पर कराये गए संकल्प अधिक प्रभावशाली सिद्ध होते हैं। जैसे -

पर्वों पर : वर्षाकाल में गुरुपूर्णिमा, श्रावणी (रक्षाबंधन), जन्माष्टमी, ऋषिपंचमी, पितृपक्ष जैसे महत्त्वपूर्ण पर्व आते हैं। गुरुपूर्णिमा पर गुरु की स्मृति में या गुरुनिर्देशों के नाते; श्रावणी और ऋषि पंचमी पर ऋषि परम्परा, ऋषिऋण चुकाने, भाई-बहिन के प्रेम की स्मृति में; पितृपक्ष में पितृऋण चुकाने, पितरों की स्मृति में वृक्षारोपण के प्रभावी प्रयोग किए-कराए जा सकते हैं। यज्ञों-संस्कारों के साथ तो यह क्रम जोड़ने के प्रयास किए ही जाते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि मौसम की अनुकूलता के साथ पर्वों की प्रेरणा का सुसंयोग बनाकर प्राणिमात्र के लिए हितकारी इस अभियान को व्यापक गति दने के विवेकपूर्ण प्रयोग बहुत ही प्रभावी सिद्ध हो सकते हैं।

तरुपुत्र-तरुमित्र कार्यक्रम इस दिशा में बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। भविष्य में इसे और भी व्यापक और लोकप्रिय बनाया जा सकता है। इसके लिए निम्न गेय पद के अनुसार जनभावनायें उभारने और उन्हें साकार रूप देने में पर्याप्त सफलता मिल सकती है। **पद** :

तरुपुत्रों का वरण करो, ये थोड़े में पल जाते हैं।
निश्चित ही पुत्रों से ज्यादा, पुण्य-सुयश दे जाते हैं।।
मित्र मानकर तुष्ट करो, ये स्वार्थ रहित करते उपकार।
प्राणवायु, आहार आदि के, जीवन में भरते उपहार।।
मातु-पितावत्, श्रद्धापूर्वक वृक्षों का सम्मान करें।
ये विषपायी औगढ़दानी, जगती का कल्याण करें।।

अपने देश के नर-नारी भावनावश विशेष पुरुषार्थ कर लेते हैं। शरीर से जर्जर व्यक्ति भी किसी के लिए मनौती मनाने के लिए सैकड़ों सीढ़ियाँ, कठिन चढ़ाईयाँ पार करके देवस्थलों तक पहुँच जाते हैं। स्वयं भूखे रहकर भी प्रसन्नतापूर्वक दान-पुण्य करते हैं। प्रकृति माता के पूजन के भाव से ब्रह्मा-विष्णु-महेश, इन्द्रादि के पूरक प्रतीक वृक्षों के रक्षण-संवर्धन के लिए वे अनुपम पुरुषार्थ कर सकते हैं। नैष्ठिक साधक जनमानस में ऐसे भाव जगाने में समर्थ हो सकते हैं।

भारतभूमि को सस्यश्यामला (हरीतिमा से शोभित) कहा गया है। उसे पुनः उसी गरिमामय अवस्था में पहुँचाने के लिए संकल्पित, समन्वित, सहकारी पुरुषार्थ करना श्रेष्ठतम यश और पुण्य देने वाला कार्य है। आइये हम तुरंत इसमें जुट जाएँ। *

क्या देव सो जाते हैं?

एक समीक्षात्मक चिंतन

मान्यता : भारत के एक बहुत बड़े भूभाग में यह मान्यता है कि देवशयनी एकादशी (आषाढ़ शुक्ल 11) से देवोत्थान एकादशी (कार्तिक शुक्ल 11) तक देवता सोते हैं। इसी आधार पर तमाम कर्मकाण्डी पंडितों द्वारा इस बीच विवाह-यज्ञोपवीत आदि पारिवारिक संस्कार करने-कराने का निषेध किया जाता है। भोलीभाली जनता के मन में यह धारणा बिठा दी गई है कि चूँकि इस बीच देवगण सोते हैं, इसलिए उस समय किए गये पूजन को कौन स्वीकार करेगा? परिजनों को देवताओं के स्नेह-आशीर्वाद का लाभ कैसे मिलेगा?

यदि उक्त मान्यता को सच मान लिया जाय तो देवशयनी 11 से देवोत्थान 11 तक किसी भी प्रकार के पूजन-अनुष्ठान नहीं किए जाने चाहिए। लेकिन प्रामाणिक तथ्य उक्त मान्यता के विपरीत हैं।

तथ्य देखें : पंचांग पर दृष्टि डालें तो इस बीच निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण पर्व-त्यौहार आते हैं, जिन्हें बड़ी निष्ठा के साथ मनाया जाता है। जैसे :-

गुरुपूर्णिमा : यह पर्व आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा को मनाया जाता है। सनातन धर्म से सम्बद्ध सभी सम्प्रदायों में यह पर्व बड़ी श्रद्धा और बहुत उत्साह के साथ सम्पन्न किया जाता है।

श्रावणी (श्रावण शुक्ल पूर्णिमा) : श्रावणी पर्व को द्विजत्व के परिष्कार एवं उन्नयन का विशिष्ट पर्व माना जाता है। भाई-बहिन के दिव्य स्नेह का प्रतीक रक्षाबन्धन भी इसी दिन होता है।

शिवार्चन : श्रावण मास में भगवान शिव की आराधना हेतु विशेष व्रत, तप आदि किए जाते हैं।

जन्माष्टमी (भाद्रपद कृष्ण अष्टमी) : भगवान कृष्ण का जन्मोत्सव लगभग पूरे भारत में बड़े समारोहपूर्वक श्रद्धा सहित मनाया जाता है।

शारदीय नवरात्र (आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से नवमी) : नौ दिन तक अधिकांश आस्थावान इन दिनों विशेष जप, पाठ, तप, व्रत आदि के नियम निभाते हैं। नौ दिन तक विशेष पूजन एवं यज्ञादि के क्रम चलाये जाते हैं।

दशहरा (आश्विन शुक्ल 10) : भगवान राम द्वारा रावण के आतंक को समाप्त करने का यह पर्व श्रद्धाभरे पूजन और उत्साहभरे समारोह के साथ सम्पन्न किया जाता है।

दीपावली : लक्ष्मी-गणेश पूजन के साथ यह पर्व देश के सभी हिस्सों में, समाज के सभी वर्गों द्वारा मनाया जाता है। दिवाली के पहले धनतेरस और रूप चतुर्दशी तथा बाद में गोवर्धन पूजा-अन्नकूट एवं यम द्वितिया (भाई दूज) के पर्व भी पूरे जोश-खरोश के साथ सम्पन्न किए जाते हैं।

समीक्षा : यदि इस अवधि में देवगण सो जाते हैं तो इतनी महत्त्वपूर्ण साधनाओं और पर्व पूजनों में किन्हें आवाहित-पूजित किया जाता है? क्या ये सभी साधनाएँ, पूजाएँ निरर्थक जाती हैं? यदि यह सच है तो तत्त्वदर्शी मनीषियों ने इस बीच इतने महत्त्वपूर्ण पर्वों को महत्त्व क्यों दिया?

वेदमत के अनुसार देवशक्तियाँ कोई मानव शरीरधारी प्राणी नहीं हैं जो साते-जागते रहते हैं। उन्हें प्राण की, परम चेतना की विशिष्ट धाराओं के रूप में मान्यता दी गई है। वे सो जायें, निश्चेष्ट हो जायें तो प्रकृति के तमाम क्रम ही रुक जायेंगे। फिर यह मान्यताएँ क्यों प्रचलित हुईं?

विवेकपूर्वक देखें तो यह चार माह वर्षाकाल के होते हैं। इस बीच यात्रा करने, समारोह सम्पन्न करने में प्राचीनकाल में कठिनाइयाँ होती थीं। विवाह, यज्ञोपवीत आदि उन दिनों पारिवारिक सम्मेलन एवं समारोहपूर्वक करने की परिपाटी थी। दूर-दूर से सम्बन्धीगण एकत्रित होते थे। वर्षाकाल में यात्रा करने, आवास व्यवस्था बनाने, खुले में मण्डप बनाने, समारोह करने में अनेक कठिनाइयाँ आती थीं। इसलिए प्रकृति की प्रतिकूलता के बीच उन समारोहों को करना युक्तिसंगत नहीं माना गया। प्रकृति की प्रतिकूलता को 'देव सो गए' कहकर अलंकारिक ढंग से व्यक्त किया गया होगा।

आशय यह है कि देवगण सोते नहीं हैं। सतत जागरूकता-सक्रियता उनका सहज गुण है। इसीलिए उस बीच इतने महत्त्वपूर्ण पर्वों-पूजनों पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया गया। संस्कारों के साथ जुड़े समारोहों के लिए अनुकूल समय न रहने के कारण उन्हें न करने का व्यावहारिक नियम बना दिया गया।

उन दिनों यात्रा में कठिनाइयाँ होने के कारण सतत भ्रमण करने वाले यती-संत भी यात्रा बंद कर देते थे। किसी उपयुक्त स्थान पर रुक कर 'चातुर्मास साधना' सम्पन्न करते थे।

निष्कर्ष : अब परिस्थितियाँ भिन्न हैं। संस्कारों को सम्पन्न करने के विधि-विधान सुगम हो गए हैं। उन्हें सम्पन्न करने के लिए घरों, तीर्थों, आश्रमों में समुचित सुविधाएँ उपलब्ध हैं। हर मौसम में यात्राएँ करने की सुविधाएँ विज्ञान ने उपलब्ध करा दी हैं। इसलिए 'देव सोते हैं' की अलंकारिक उक्ति का मर्म समझकर अपनी मान्यताओं में संशोधन कर लेना चाहिए। पारिवारिक संस्कारों को विवेकपूर्वक परिवार के लिए उचित समय देखकर कभी भी सम्पन्न कर लेना चाहिए। अन्ध परम्पराओं की अपेक्षा विवेकपूर्वक प्रक्रियाओं को महत्त्व दिया जाना हर दृष्टि से लाभप्रद है।

विश्व पर्यावरण दिवस पर गतिशील हुआ वृक्षगंगा अभियान

गायत्री परिवार यूथ ग्रुप कोलकाता ने आरंभ किए कई नये अभियान

जगदल में हर गुरुवार को होगा वृक्षारोपण

कोलकाता। प. बंगाल

गायत्री परिवार यूथ ग्रुप कोलकाता ने विश्व पर्यावरण दिवस से एक नई पहल की। उस दिन जगदल में 101 पेड़ लगाये गये। इसके साथ जगदल शाखा के विशेष सहयोग से हर बृहस्पतिवार को वृक्षारोपण का नया अभियान आरंभ हो गया। उस समय भाटपाड़ा म्युनिसिपलिटी के वार्ड नं 13 के पार्षद श्री राजकुमार चौधरी भी उपस्थित थे।

पर्यावरण दिवस पर लिलुआ ईस्टर्न रेलवे हिंदी हाई स्कूल में भी रेलवे के कई पदाधिकारियों की उपस्थिति में 101 वृक्ष लगाए गये। हावड़ा म्युनिसिपल कारपोरेशन के वार्ड नं 62 के पार्षद श्री कैलाश मिश्रा ने भी पेड़ लगाए। इंडियन आइडल अकादमी, न्यू टाउन में भी कर्मयोग फाउंडेशन की सहायता से बाल संस्कार शाला के बच्चों के साथ वृक्षारोपण किया गया।

बृहद वृक्षारोपण अभियान के गौरवशाली पल

- 1 जुलाई को होगा 400 वाँ वृक्षारोपण सप्ताह
- श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी मुख्य अतिथि होंगे
- अब तक रोपे 40,000 पेड़

गायत्री परिवार यूथ ग्रुप कोलकाता सन् 2010 से प्रत्येक रविवार को लगातार वृक्षारोपण अभियान चला रहा है। यह शाखा अब तक लगभग 40,000 पौधे कोलकाता और आसपास के क्षेत्र में लगा चुके, उन्हें विकसित कर चुकी है। अभियान के प्रति अथाह समर्पण और अटूट निष्ठा से शाखा की स्थानीय मीडिया में प्रतिष्ठा निरंतर बढ़ रही है, साथ ही एक राष्ट्रीय पहचान स्थापित हो रही है।

कोलकाता शाखा 1 जुलाई को अपने वृक्षारोपण अभियान का 400वाँ सप्ताह मना रही है। इस अवसर पर उनके द्वारा राष्ट्रीय पर्यावरण संगोष्ठी का आयोजन किया गया है। श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे।

बेंडेल रेलवे स्टेशन परिसर में वृक्षारोपण

पूरे स्टेशन परिसर को हराभरा करने का आमंत्रण मिला

जीपीवायजी, कोलकाता ने सतत वृक्षारोपण के 396वे रविवार को दिनांक 3 जून को बेन्डेल रेलवे स्टेशन परिसर में वृक्षारोपण किया। इस अवसर पर जीपीवायजी के सदस्यों ने पर्यावरण संरक्षण के प्रति जन-जन को जागरूक करने वाला एक नुक्कड़ नाटक भी प्रस्तुत किया। लोगों ने इसे खूब सराहा, वृक्षारोपण का संकल्प भी लिया।

आरपीएफ इंस्पेक्टर श्री गुरुप्रसाद को पौध देते श्री रवि शर्मा

वृक्षारापेण के समय आपीएफ इंस्पेक्टर श्री गुरुप्रसाद अपनी टीम के साथ उपस्थित थे। पूरी टीम ने गायत्री परिवार के वृक्षारोपण अभियान में पूरा-पूरा साथ देने का आश्वासन देते हुए पूरे स्टेशन परिसर को हराभरा कर देने का आग्रह किया। उपरोक्त कार्यक्रमों की सफलता में सर्वश्री प्रह्लाद शर्मा, गौरीशंकर केसरी, मीनू सिंह, पवन महतो, राजकुमार सिंह, राजेश्वरी त्यागराजन, अनिल राजभर, संजय पटनायक, आदर्श गुप्ता आदि का सहयोग रहा।

बेन्डेल स्टेशन परिसर में नुक्कड़ नाटक से पर्यावरण रक्षा का संदेश दिया

आरंभ हुए नए अभियान

वृक्षारोपण अभियान से जीपीवायजी कोलकाता की संगठनात्मक शक्ति निरंतर बढ़ रही है। परिणाम स्वरूप कई नये आन्दोलन भी आरंभ हुए हैं।

गंगा शुद्धि अभियान : यह अभियान पिछले 34 सप्ताह से चल रहा है। इस कार्य में काफी लोग जुड़ रहे हैं एवं गंदगी न करने, प्लास्टिक का कम उपयोग करने एवं पर्यावरण को बचाने हेतु संकल्प भी ले रहे हैं। श्रीरामपुर, हुगली के दे घाट पर गंगा आरती भी की जा रही है।

बाल संस्कार शालाएँ : युवाओं में सृजनशील, संस्कारवान नई पीढ़ी तैयार करने का उत्साह भी लगातार बढ़ रहा है, परिणाम स्वरूप बाल संस्कार शालाओं का अभियान भी चल पड़ा है। जून के प्रथम सप्ताह में नैहाटी, श्रीरामपुर, न्यू टाउन में 3 नयी बाल संस्कार शालायें आरंभ हुईं। जीपीवायजी कोलकाता द्वारा कुल 15 बाल संस्कार शालाएँ चलाई जा रही हैं, जिनमें 400 बच्चों का भविष्य सँवारा जा रहा है।

आत्मरक्षा की कक्षाएँ : कन्या कौशल शिविर, शेगांव की प्रेरणा से तीन स्थानों पर आत्मरक्षा के लिए प्रशिक्षित करने वाली कुंगफू की कक्षाएँ आरंभ की गई हैं।

आत्मरक्षा की कक्षा में कुंगफू सीखती किशोरियाँ

15000 पेड़ रोपने के संकल्प का श्रीगणेश हुआ

अकोट, अकोला। महाराष्ट्र

युग सृजेता संकल्प समारोह नागपुर और कन्या कौशल शिविर शेगाँव ने अकोट के युवा संगठन दिया के युवाओं में भागीरथी संकल्प जगाये हैं। तद्नुसार इन युवाओं ने 15000 वृक्षारोपण करने का संकल्प लिया है। विश्व पर्यावरण दिवस को उसी संकल्प और उत्साह के साथ मनाया गया। श्री सागर राजूभाऊ चोन्देकर के अनुसार उस दिन नगरवासियों को साथ लेकर कार्यकर्त्ताओं ने150 पौधे रोपे।

अकोट में पौधे रोपते परिजन

पंच कुण्डीय यज्ञ में तरुपूजन संस्कार

गद्दीपुर, सीतापुर। उत्तर प्रदेश

21 से 23 मई की तारीखों में गद्दीपुर गाँव में तीन दिवसीय पञ्च कुण्डीय गायत्री महायज्ञ आयोजित हुआ, जिसमें शामिल श्रद्धालुओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के भरपूर प्रयास किए गए। पूर्णाहुति के दिन छायादार, फलदार, औषधीय तथा आध्यात्मिक महत्व के 201 पौधों का तरुपूजन संस्कार किया गया। इन्हें गद्दीपुर गाँव सहित दूर-दराज़ से आए लोगों ने बड़ी श्रद्धा के साथ पुत्रवत पालने का संकल्प लिया। वृक्षारोपण के प्रति मुस्लिम भाइयों में भी उत्साह देखा गया, उन्होंने भी तरुप्रसाद ग्रहण कर वृक्षारोपण करने का वचन दिया। रा. इ. कॉलेज के प्राचार्य डॉ. राजीव सिंह ने मुख्य यजमान की भूमिका निभाई।

पर्यावरण संवर्धन दीपयज्ञों ने नवचेतना जगाई

अलीराजपुर। मध्य प्रदेश

विश्व पर्यावरण दिवस पर गायत्री शक्तिपीठ अलीराजपुर द्वारा हनुमान मंदिर, तुलसीमाता चौराहा, बोरखड़ प्रांगण में पर्यावरण संवर्धन दीपयज्ञ आयोजित किया गया। श्री शक्तिपीठ व्यवस्थापक संतोष वर्मा के अनुसार वृक्ष लगाने, पॉलीथीन का उपयोग न करने, जल संरक्षण करने जैसे विषयों पर श्री जीएल भाटिया ने मार्मिक तथ्यों के साथ प्रकाश डाला और लोगों को पर्यावरण संरक्षण में सहयोगी बनने के लिए प्रेरित किया। श्रीमती गायत्री जगदीश चन्द्र राठौड़ ने दीपयज्ञ सम्पन्न कराया। बहारपुरा महिला मण्डल की विद्या धनराज राठौड़ व अन्य बहिनों ने घर-घर जाकर सम्पर्क व आमंत्रण देकर कार्यक्रम की सफलता की पृष्ठभूमि तैयार की।

डोंगरगाँव, आगर। मध्य प्रदेश

देवग्राम डोंगरगाँव में नवनिर्मित पाटीदार समाज धर्मशाला के लोकार्पण से पूर्व वहाँ ग्रामवासियों द्वारा पर्यावरण संरक्षण दीपयज्ञ आयोजित किया गया। श्री योगेश पाटीदार ने इस अवसर पर उपस्थित भाई-बहिनों को नवनिर्मित धर्मशाला में एक-एक वृक्ष की पौध लगाने और उसका मित्रवत अथवा पुत्रवत पालन करने का संकल्प दिलाया। उन्होंने पर्यावरण प्रेमी बनकर रहने और पर्यावरण को बचाने के लिए पॉलीथीन एवं डिस्पोज़ेबल प्लेट-ग्लास आदि से परहेज करने के संकल्प भी लोगों को दिलाये।

डोंगरगाँव में दीपयज्ञ कराती बहिनें

इससे पूर्व प्रभा पाटीदार ने नियमित ध्यान, जप, सूर्यार्घ्यदान जैसे प्रयोगों का अभ्यास कराते हुए इनके द्वारा शरीर व मन को शांत एवं ऊर्जावान बनाये रखने की प्रेरणा दी। सुनीता पाटीदार ने नारी को नारायणी वाले स्वरूप तक विकसित होने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि आज फैशन और रूढ़िवादिता के नाम पर खर्च हो रहे लाखों-करोड़ों रुपयों को यदि बचाया जा सके तो पूरे समाज का नवनिर्माण हो जायेगा।

मुक्तिधाम में रोपे 100 पेड़

मित्रवत पालन का संकल्प लिया

भिलाई, दुर्ग। छत्तीसगढ़

दिया छत्तीसगढ़, कर्मवीर युवा संगठन एवं युवा शक्ति संगठन बोरसी के 6 जून को नव निर्मित बोरसी मुक्तिधाम में तरुमित्र योजना के अन्तर्गत 100 पौधे रोपे। दिया संयोजक डॉ. पी एल साव ने इस अवसर पर जीवन में वृक्षों के महत्त्व की चर्चा की। देना बैंक भिलाई की सीनियर मैनेजर एवं दिया की महिला शाखा की प्रभारी सुश्री तिलोत्तमा मुदुली ने लगाये गये वृक्षों का पूजन करते हुए उन्हें मित्रवत गले लगवाया। सभी युवाओं ने हर रोज आकर अपने साल इसीदिन उनका जन्मोत्सव मनाने का संकल्प लिया।

मुक्तिधाम परिसर में वृक्षारोपण करती दिया, छत्तीसगढ़ की टोली

वेनगंगा के घाट पर सामूहिक श्रमदान

वृक्षगंगा अभियान के प्रति निष्ठावान कार्यकर्त्ताओं का सम्मान

बालाघाट। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार के युवा एवं महिलाओं ने विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में वैनगंगा नदी के महामृत्युंजय घाट एवं मोक्षधाम परिसर में सामूहिक श्रमदान किया। उन्होंने विगत कई वर्षों से निरंतर लगाये जा रहे पेड़ पौधों की निराई-गुड़ाई की, खाद-पानी दिया और पूरे क्षेत्र की सफाई की। इस अभियान में महिला आयोग की श्रीमती हेमा अनिल बाधवानी, नेकी की दीवार से पापा भाई, पतंजलि योग समिति, नगर पालिका परिषद आदि संस्थाओं के ढेरों कार्यकर्त्ता सहयोगी बने।

शक्तिपीठ की सक्रिय कार्यकर्त्ता श्रीमती उषा अनीराम क्षीरसागर का जन्मदिन जंगल के मंगलमयी वातावरण में एक जामुन का पौधा लगाकर मनाया गया। वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री महेश खजांची ने वृक्षगंगा अभियान में वर्षभर सक्रिय रहने वाले डॉ. ए.पी. गाढ़े सहित अनेक कार्यकर्त्ताओं को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

वृक्षमित्रों को सम्मानित करते श्री महेश खजांची

शक्तिपीठ प्रांगण में 108 पौधे रोपे

1500 पेड़ सभी 14 ब्लॉकों में रोपे जायेंगे

नवादा। बिहार

गायत्री शक्तिपीठ नवादा ने विश्व पर्यावरण दिवस पर शक्तिपीठ प्रांगण में 108 पौधे लगाते हुए इस वर्ष के संकल्पित वृक्षगंगा अभियान का शुभारंभ किया। उल्लेखनीय है कि शक्तिपीठ से संबद्ध युवा प्रकोष्ठ ने इस वर्ष जिले के सभी 14 ब्लॉकों में 1500 पेड़ लगाने का संकल्प लिया है। प्रातःकालीन यज्ञ में जिला समन्वयक श्री कैलाश प्रसाद सिंह के नेतृत्व में पूरे विधि-विधान के साथ लगभग 4-4 फीट ऊँचे पौधों का पूजन करने के पश्चात यह वृक्षारोपण अभियान चलाया गया।

नवादा में वृक्षारोपण से पूर्व हो रहा वृक्षों का पूजन

बच्चों की चित्रांकन प्रतियोगिता

खलारी, राँची। झारखण्ड

प्रज्ञापीठ खलारी ने ब्रह्मकुमारीज़ एवं उज्ज्वला भारती के पर्यावरण दिवस पर बच्चों की चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की। उन्हें पर्यावरण संरक्षण के कार्य में सहयोगी बनने के लिए प्रेरित किया गया। विजेता बच्चों को पुरस्कार प्रदान किया गए। सबने मिलकर वृक्षारोपण भी किया।

अंतर्राष्ट्रीय तंबाकू निषेध दिवस

प्राणवान प्रयासों की प्रभावशाली परिणतियाँ

गरीब बस्तियों में सतत मंथन

- हर रविवार को अलग-अलग बस्तियों में निकलती हैं रैलियाँ
- 25 बस्तियों में कार्यक्रम हुए
- प्रत्येक बस्ती का होगा मंथन

देवास। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार के युवा प्रकोष्ठ और नेहरू युवा केन्द्र ने मिलकर देवास की गरीब बस्तियों को नशामुक्त करने का बीड़ा उठाया है। दोनों मिलकर प्रत्येक रविवार को अलग-अलग गरीब बस्तियों में रैली, सभा, नुक्कड़ नाटक और जनसंपर्क करते हुए लोगों को नशासुर के प्रभाव से मुक्त करने का प्रयास करते हैं। जिस चबूतरे पर जगह मिल जाती है, उसी को अपना मंच बना लेते हैं और गीत, नारे, नाटक, प्रोजेक्टर, उद्बोधन के माध्यम से लोगों को अपनी बात समझाते हैं।

3 जून को मोती बंगला की गरीब बस्ती में यह कार्यक्रम आयोजित हुआ। इससे पूर्व बागरी मोहल्ला, अम्बेडकर नगर, रविदास नगर, गीता भवन के पीछे जबरन कालोनी, शंकरगढ़ ,गजरा गियर्स की झोपड़ी पट्टी, बावडीया आदि 25 बस्तियों में ऐसे कार्यक्रम सम्पन्न हो चुके हैं।

दोनों ही संगठनों ने देवास की हर गरीब बस्ती में यह आन्दोलन चलाकर उनका जीवन स्तर ऊँचा उठाने का संकल्प लिया है। उन्होंने पीड़ितों-प्रभावितों और नशा छोड़ने के लिए उत्साहित लोगों से बार-बार संपर्क करने और प्रेरित-प्रोत्साहित करने की योजना भी बनाई है। गायत्री परिवार के प्रमोद निहाले, महेश शर्मा, अभिषेक कुशवाह, मनीष व्यास आदि इस अभियान में मुख्य रूप से सक्रिय हैं। नेहरू युवा केन्द्र के श्री अनिल जैन अपनी टीम के साथ सहयोग कर रहे हैं।

इन कार्यक्रमों में नशामुक्ति के अलावा लोगों को स्वच्छता, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण आदि आन्दोलनों के प्रति भी जागरूक किया जाता है।

गली-गली घूमती युग निर्माणी टोली

नशा प्रभावित क्षेत्रों में हुए कार्यक्रम

- रैली, जनसंपर्क एवं हस्ताक्षर अभियान चलाये
- वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया

कोलकाता। प.बंगाल

विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर साउथ कोलकाता शाखा ने उन गली-कूँचों में नशामुक्ति रैली निकाली, जहाँ के बड़ी संख्या में लोग शराबी हैं। दोपहर 3 से सायं 7 तक कार्यक्रम चला, जिसमें कार्यकर्त्ताओं ने लोगों से व्यक्तिगत संपर्क करते हुए नशे के खिलाफ जनमत तैयार करने के लिए हस्ताक्षर अभियान भी चलाया।

हस्ताक्षर अभियान और रैली गली गुचड़ वाले उन इलाकों में निकाली जहाँ लोग शराब से ग्रसित हैं। 3 बजे से 7 बजे तक का कार्यक्रम चला, राह चलते भाइयों से हस्ताक्षर कराए गए कि वे भविष्य में नशा न करें। इस अभियान में नगर के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्रीमती अंजना मेहरिया, सर्वश्री अनिल सिंह, दिनेश सिंह, विद्या राय, गोसाई बाबा, पवन, विद्या, सपना आदि भी भागीदार बने। विभिन्न धर्म-सम्प्रदायों एवं प्रशासन का भरपूर सहयोग मिला।

नुक्कड़ नाटक का प्रभाव

जगह-जगह नुक्कड़ नाटक भी किए गये। बहिन सपना ने कमाल का प्रदर्शन किया, जिसे देखकर दर्शकों ने अपने हाथ के बीड़ी, सिगरेट, गुटखा, तंबाकू, खैनी तुरंत फैंकते हुए नशा छोड़ने का मन बना लिया।

कोलकाता में जनसंपर्क और नुक्कड़ नाटकों में भाग ले रहे वरिष्ठ कार्यकर्त्ता

पूरे छत्तीसगढ़ में निकली रैलियाँ

बिलासपुर। छत्तीसगढ़

विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर बिलासपुर, रायपुर, दुर्ग, रायगढ़, जशपुर, अंबिकापुर, जांजगीर-चांपा, बालोद, गरियाबंद, धमतरी जिलों एवं बस्तर संभाग के सभी सातों जिलों में अत्यंत प्रभावशाली व्यसनमुक्ति रैलियों का आयोजन किया गया। इनमें हजारों लोगों को नशा छोड़ने के लिए सहमत करते हुए उनसे नशीले पदार्थ एकत्रित किये गए और उनकी सार्वजनिक रूप से होली जलाई गई।

रैली में विशेषकर युवाओं को नशीले पदार्थों के चंगुल में फँसने से बचाने के लिए तंबाकू और शराब के शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों की विस्तार से जानकारी दी गई, तत्संबंधी जेबी पुस्तकों और परिपत्रों का वितरण भी किया गया।

सुकमा शाखा ने रैली के अंत में नशे का पुतला जलाया

देवास और उज्जैन जिलों में प्रभातफेरी, वाहन रैली और मानव शृंखलाएँ

देवास में निकली वाहन रैली, उज्जैन में बनी विशाल मानव शृंखला और उसे संबोधित करते केन्द्रीय प्रतिनिधि

देवास। मध्य प्रदेश

सामाजिक न्याय एवं निशक्तजन कल्याण विभाग तथा अखिल विश्व गायत्री परिवार के संयुक्त तत्वावधान में नशामुक्ति मानव शृंखला, जनजागृति वाहन रैली एवं संकल्प समारोह आयोजित हुआ।

गायत्री शक्तिपीठ से वाहन रैली का शुभारंभ महापौर श्री सुभाष शर्मा, म.प्र.पापुनि अध्यक्ष श्री रायसिंह सेंधव, कलेक्टर डॉ. श्रीकांत पांडे एवं समर्पित युग साधिका दुर्गा दीदी ने हरी झंडी दिखाकर किया। इसमें शामिल नशासुर की झांकी, गुटका, पाउच, बीड़ी, शराब, तम्बाकू के रूप में नशे की अर्थी निकालते छोटे-छोटे बच्चों ने हजारों लागों का ध्यानाकर्षित किया।

सयाजी द्वार पहुँचने पर एक लम्बी नशामुक्ति मानव शृंखला बनाई गई। तत्पश्चात् विधायक गायत्री राजे पवार की उपस्थिति में नशामुक्ति संकल्प समारोह आयोजित हुआ। इस अवसर पर जिला चिकित्सालय के डॉ. कटारे ने तम्बाकू के दुष्प्रभाव बड़े प्रभावशाली ढंग से समझाये, नशामुक्त जीवन जीने के संकल्प दिलाये। कायक्रम में जनअभियान परिषद, नेहरू युवा केन्द्र, लायंस क्लब, एन.सीसी, एन.एन.एस., स्काउट एण्ड गाइड एवं नगर की विभिन्न सामाजिक और धार्मिक संस्थाओं का प्रशंसनीय सहयोग मिला।

उज्जैन। मध्य प्रदेश

उज्जैन नगर कोठी पैलेस से तरणताल तक प्रभात फेरी निकाली गई। इसके समापन पर विशाल मानव शृंखला बनाते हुए समाज को नशामुक्ति का संदेश दिया गया। इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री प्रताप शास्त्री, श्री सुनील शर्मा श्री महाकालेश्वर श्रीवास्तव जी ने तम्बाकू का सेवन नहीं करने तथा 5 अन्य लोगों को इसके लिए संकल्पित कराने का संकल्प उपस्थित लोगों को कराया।

उज्जैन जिले के खाचरौद, नागदा, तराना, बड़नगर ग्राम लेकोड़ा, आकासोदा में भी उज्जैन की तरह ही विविध कार्यक्रम आयोजित हुए।

सांयकाल टावर चौराहे पर जनजागृति शिविर लगाया गया। इसमें आर.डी. गार्डी मेडिकल कॉलेज के मनोचिकित्सकों ने लोगों को तम्बाकू छोड़ने के सरल उपाय बताए और औषधियाँ भी प्रदान कीं। बहिनों ने व्यसनमुक्ति गीत प्रस्तुत किये। 'तम्बाकू के नुकसान लिखो' प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार दिये गए।

गिरिडीह में नुक्कड़ नाटकों ने बदल दी सोच

लोगों ने तत्काल छोड़ दिये बीड़ी, सिगरेट, गुटका, तंबाकू

गिरिडीह, झारखण्ड।

गायत्री परिवार गिरिडीह के युवाओं ने 31 मई को कचहरी परिसर, टावरी चौक, अल्कापुरी, भंडारीडीह, विश्वनाथ मंदिर, मकतपुर चौक, कालीबाकड़ी चौक में नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से लोगों को नशा से दूर रहने के लिए प्रेरित किया। प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री कामेश्वर सिंह के अनुसार ये इतने प्रभावशाली थे कि कई दर्शकों ने तंबाकू सहित विभिन्न दुर्व्यसन तत्काल छोड़ने और फिर कभी नहीं करने का संकल्प लिया।

जगह-जगह उद्बोधन भी हुए जिनमें नशे को गरीबी व बीमारी की जड़ बताया गया। तथा समाज और राष्ट्र को ऊँचा उठाने के लिए अपनी जीवन शैली बदलने की अपील की गई।

इस प्रस्तुति में दर्शन पंडित, किशुन, अरुण कुमार, जयप्रकाश राम, प्रकाश मंडल, जितेन्द्र, हरिहर आदि की सराहनीय भूमिका रही।

हजारीबाग, झारखण्ड।

विश्व तंबाकू निषेध दिवस के अवसर पर हजारीबाग में मानव शृंखला बनाकर लोगों को नशा को जड़ से मिटाने का संदेश दिया गया। चरही सहित कई स्थानों पर गायत्री महायज्ञों का आयोजन हुआ, जिनमें श्रद्धालुओं को व्यसनमुक्ति के संकल्प दिलाए गए। सर्वश्री आजादी सिंह, मनोज कुमार, शिवनारायण साहू, राजाराम आदि के नेतृत्व में थाना गली, मटवारी चौक, संत कोलंबस कॉलेज चौक सहित अनेक स्थानों में तरह-तरह के कार्यक्रमों से जागरूकता अभियान चलाए गए। इसमें शिक्षाविद्, समाजसेवी तथा बड़ी संख्या में युवाओं की उत्साहवर्धक भागीदारी रही।

11 गाँवों में निकाली व्यसनमुक्ति रैलियाँ

डोमचांच, झारखण्ड।

श्री राजकुमार मेहता के नेतृत्व में युवा मण्डल ने डोमचांच, चंदवाड़ा, जयनगर, चपनाली सहित 11 गाँवों में रैली निकाल कर नशा के दुष्परिणामों से लोगों को अवगत कराया, व्यसनमुक्ति पत्रक घर-घर पहुँचाये। इस अवसर पर 17 युवाओं ने नशा छोड़ने और पाँच-पाँच पौधे लगाकर उनका पालन-पोषण करने के संकल्प लिए। सर्वश्री लखनलाल प्रजापति, दिनेश ठाकुर, शिवकुमार वर्णवाल, ज्ञानचंद मेहता आदि की इस अभियान में सक्रिय भूमिका रही।

वनवासी क्षेत्र में चल रहा है सघन जनजागरण अभियान

जोबट, अलीराजपुर। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ जोबट पर 31 मई को स्वास्थ्य जागृति शिविर आयोजित हुआ। खरगोन से आये देवेन्द्र पारगीर ने इसे संबोधित करते हुए नशे को जीवन का सबसे बड़ा शत्रु बताते हुए नशा करने वालों को आत्ममंथन के लिए प्रेरित किया। डॉ. अमित दलाल कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे। उन्होंने नशे से होने वाली बीमारियों की अनेक रिपोर्टों के माध्यम से जानकारी दी। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे एड. सुधीर जैन ने भी लोगों को सत्परामर्श दिए।

इस अवसर पर व्यसनमुक्ति चित्र एवं फ्लैक्स प्रदर्शनी भी लगाई गई। शक्तिपीठ व्यवस्थापक डॉ. शिवनारायण सक्सेना के अनुसार कार्यकर्त्ताओं ने इस कार्यक्रम की सफलता के लिए एक सप्ताह पूर्व से ही घर-घर संपर्क अभियान आरंभ कर दिया था।

गायत्री शक्तिपीठ जोबट पर आयोजित जनसभा

अलीराजपुर। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ अलीराजपुर द्वारा विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर व्यसनमुक्ति दीपयज्ञ आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि श्री एम.एल. त्यागी, सीईओ जिला पंचायत अलीराजपुर ने इस अवसर पर तम्बाकू के दुष्प्रभावों की विस्तार से जानकारी दी। डब्ल्यू.एच.ओ. की रिपोर्ट के अनुसार उन्होंने बताया कि सन् 2020 तक विश्व के 50 करोड़ लोग तम्बाकू सेवन के कारण कैंसर ग्रसित हो जायेंगे।

इस कार्यक्रम में प्रज्ञागीत, नुक्कड़ नाटक, प्रदर्शनी आदि के माध्यम से लोगों को जागरूक किया। कार्यक्रम का संचालन श्री संतोष वर्मा ने किया।

गलती होना बुरा नहीं है, लेकिन गलती को न सुधारना बुरा है। रत्नाकर, सूरदास, तुलसीदास ने भी गलतियाँ की थीं, लेकिन उन्हें सुधार लिया तो वे महान बन गये।

कन्याओं को देवी के रूप में पूजा, देवभाव जगाया

कन्या कौशल शिविर

- 140 कन्याओं ने भाग लिया
- 70 कन्याओं ने दीक्षा ली
- शिविर संचालन शांतिकुंज की ब्रह्मवादिनी बहिनों ने किया

उज्जैन। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ उज्जैन पर पाँच दिवसीय कन्या कौशल शिविर आयोजित हुआ, जिसमें क्षेत्र की 140 कन्याओं ने भाग लिया। शिविर में भाग ले रही समस्त कन्याओं को देवी के रूप में देखना और उसी भाव के साथ उन्हें अपने व्यक्तित्व में देवत्व के उदय के लिए प्रेरित करना इसकी विशेषता रही।

शिविर संचालन के लिए शांतिकुंज से श्रीमती संध्या तिवारी, श्रीमती श्रुति कीर्ति सोनी, श्रीमती मीना गड़िया, श्रीमती लक्ष्मी साहू और श्रीमती लोकेश्वरी साहू की टोली पहुँची थी। प्रथम दिन कन्या कौशल शिविर का शुभारंभ करते हुए माता को अपनी श्रद्धा, भावना और विश्वास अर्पित करने के भाव के साथ व्यक्तित्व में देवत्व का संचार करने की प्रार्थना की गई।

दूसरे दिन गौरी पूजन हुआ, जिसमें 140 कन्याओं का वैदिक मंत्रों के साथ पाद प्रक्षालन, तिलक, मंत्र दुपट्टा, पुष्पाहार, गायत्री मंत्र लेखन पुस्तिका, दक्षिणा देकर पूजन-सम्मान किया गया। गायत्री परिवार की बहिन श्रीमती चन्द्रा शर्मा एवं श्रीमती संध्या सक्सेना ने उन्हें शुभाशीष दिये। लायन्स क्लब ऊर्जा के अध्यक्ष श्री एम. एस. तोमर, ई. अवधेश वर्मा, मारवाड़ी महिला मंडल की श्रीमती सीमा गुप्ता एवं रुचि खंडेलवाल भी अपनी संस्था की ओर से गौरी पूजन में शामिल हुए।

जीवन की दिशाधारा बदलने वाली युगऋषि की दिव्य प्रेरणाओं से ओतप्रोत यह शिविर अत्यंत भावभरा था। अंतिम दिन विदाई की घड़ियाँ बड़ी भावुक थीं। पाँच दिन के साहचर्य ने सभी को एक परिवार की भावनाओं में बाँध दिया था। 'सादा जीवन उच्च विचार' के साथ जीवन जिएँ, दूसरों के साथ वह व्यवहार नहीं करना जो हमें अपने लिए पसंद नहीं, चरित्र निष्ठ बने रहें, फैशन परस्ती और फिजूलखर्ची से बचें जैसे सूत्र उनके जीवन पथ पाथेय बन गये। 70 कन्याओं ने गुरुदीक्षा संस्कार कराया।

सर्वोत्तम शिविरार्थी कन्याओं को सम्मानित करती शांतिकुंज की ब्रह्मवादिनी बहिनें

कर्त्तव्य और अधिकारों का पाठ पढ़ाया

भिलाई, दुर्ग। छत्तीसगढ़

27 मई को उपजोन भिलाई की बहिनों का महिला सम्मेलन गायत्री शक्तिपीठ सेक्टर-6 भिलाई में आयोजित हुआ। सम्मेलन में नैतिकता, स्वास्थ्य, साधना, कानूनी अधिकार जैसे अनेक विषयों पर समाज की विशेषज्ञ बहिनों ने बड़ी महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ दीं। श्री मोहन उमरे के अनुसार गायत्री परिवार की बहिनों ने श्रोताओं को साधना से व्यक्तित्व को सँवारने और संगठित होकर नयी सृष्टि का सृजन करने के लिए प्रेरित किया। पूर्व महापौर भिलाई नगर निगम सुश्री नीता लोधी ने गायत्री परिवार की महिलाओं के जनजागृति अभियान की खूब-खूब सराहना की।

छत्तीसगढ़ में चल रही है व्यक्तित्व निर्माण आवासीय शिविरों की शृंखला

- 'विजन-2026' के अंतर्गत चल रहा है अभियान
- 27 शिविर आयोजित होंगे

जनवरी 2018 को नागपुर में आयोजित युग सृजेता युवा सम्मेलन का एक महत्त्वपूर्ण सूत्र था 'विजन -2026' का आधार युवा जागृति अभियान है। छत्तीसगढ़ के प्रांतीय युवा संगठन ने इसे ध्यान में रखते हुए इस वर्ष छः दिवसीय व्यक्तित्व निर्माण आवासीय युवा शिविरों की शृंखला पर विशेष ध्यान दिया है। कुल 27 स्थानों पर शिविर होंगे, जिनके संचालन के लिए 6 टोलियाँ बनाई गई हैं।

इन शिविरों में 17 से 30 वर्ष के युवाओं को शामिल किया जा रहा है। व्यक्तित्व परिष्कार के विविध विषयों के साथ कैरियर काउंसिलिंग की जाती है और उनके व्यक्तिगत-सामाजिक जीवन की विविध समस्याओं को सुनकर उनके समाधान सुझाये जाते हैं। इनके माध्यम से हजारों युवाओं को युग सृजेता बनाने और उन्हें समाज निर्माण के महान अभियान में समर्पित करने का लक्ष्य रखा गया है।

बीजापुर : ऐसा ही एक छः दिवसीय व्यक्तित्व परिष्कार प्रशिक्षण शिविर जिला मुख्यालय बीजापुर के सामुदायिक भवन में सम्पन्न हुआ। केन्द्रीय टोली के रूप में आए सीपी साहू, लेखराम साहू, भागीरथी सोनकर, हेमलता करंगा, कलावती करंगा तथा सुनीता पोयाम ने सातों आन्दोलनों से जुड़े विविध विषयों पर युवाओं का मार्गदर्शन किया। प्रशिक्षित युवाओं की आठ टोलियाँ बनाई गईं और उन्हें भावी सक्रियता की जिम्मेदारियाँ सौंपी गईं।

कार्यक्रम की समाप्ति पर नगर के व्यापारी संघ के अध्यक्ष राजू गाँधी एवं नरेश शर्मा, रमेश सिंह सपरिवार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। उन्होंने युवाओं में उभरते सृजन संकल्पों को अपने आशीर्वादों से सिंचित किया। स्थानीय वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री रामयश विश्वकर्मा, विजय बहादुर राजभर, सहदेव वासम ने टोली को शॉल, श्रीफल देकर भावभरी विदाई दी। श्री जयपाल सिंह राजपूत ने अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

बीजापुर के शिविर में शामिल प्रतिभागी और प्रशिक्षकगण

निरंतर बढ़ रही है गर्भ संस्कारों की लोकप्रियाता

प्रशासन की पहल पर आयोजित हुआ कार्यक्रम, कई गाँवों की 100 बहिनों ने पुंसवन संस्कार कराए

इंदौर। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ केसर बाग, इंदौर पर 5 जून को सामूहिक गर्भ संस्कार महोत्सव आयोजित हुआ। इसमें ग्राम दतोदा, सिमरोल, बडदरी, चिखली, शिवनगर, जोशी गुराड़िया, मुसीर खेड़ा आदि ग्रामों की लगभग 100 बहिनों ने पुंसवन संस्कार कराये और लगभग इतने ही बच्चों के अन्न प्राशन संस्कार हुए। श्रीमती निर्मला चौहान ने बहिनों को संबोधित करते हुए पुंसवन संस्कार की वैज्ञानिकता से अवगत कराया। सुश्री सजल तिवारी के अनुसार उन्होंने ध्यान, प्राणायाम, स्वाध्याय, मंत्र जप, मंत्र लेखन के माध्यम से गर्भस्थ शिशु के स्वस्थ विकास के सूत्र दिये।

गायत्री परिवार का 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' अभियान अब अनेक क्षेत्रों में प्रशासन को भी प्रभावित कर रहा है। प्रशासनिक अधिकारी गर्भवती बहिनों में जागरूकता बढ़ाने और बच्चों को स्वस्थ-संस्कारवान बनाने के लिए इस अभियान का सहारा ले रहे हैं। इंदौर का यह कार्यक्रम भी जिला कलेक्टर के निर्देश पर एकीकृत बाल विकास सेवा परियोजना विभाग के सहयोग से आयोजित किया गया था। इस अवसर पर बाल विकास परियोजना अधिकारी श्री सुशील चक्रवर्ती, श्रीमती आरती शर्मा, श्रीमती माया उपाध्याय, श्रीकृष्ण शर्मा, अशोक जायसवाल, राकेश यादव, ओ.पी. अग्रवाल आदि कई अधिकारी उपस्थित थे।

पुंसवन संस्कार कराती इंदौर की बहिनों की टोली

ऑनलाइन बिक रहे हैं कंडे और खाद

जांजगीर-चांपा। छत्तीसगढ़ : गाय, बैल, भैंस का दूध तो आसानी से बिक जाता है लेकिन गोबर आदि का पूरा-पूरा उपयोग नहीं हो पाता। इसे देखते हुए जोंगरा गाँव के किसान राकेश जायसवाल ने ऑनलाइन सामान बेचने वाली कम्पनी अमेजन से सम्पर्क किया और अपने बनाये कण्डे, कैंचुआ खाद जैसे 52 उत्पादों को रजिस्टर्ड करा लिया। अब देश-विदेश से उनके पास इनकी भरपूर माँग आ रही है। हैदराबाद, चैन्नई, गुरुग्राम ही नहीं उनके बनाये अच्छी गुणवत्ता वाले कण्डे, खाद आदि आकर्षक पैक में इंग्लैण्ड और सिंगापुर तक जाते हैं। 6 कण्डों का पैकेट 199 रुपये में बिक रहा है। *सौजन्य : टीआर साहू, भाटापारा*

वर्षा-जल को बेकार न बह जाने दें

उसे कुएँ, हैण्डपम्प, बोरवेल के माध्यम से भूगर्भ में उतारें

देश के हर क्षेत्र में जल संकट निरंतर गहराता जा रहा है। ऐसे में उसे दूर करने में हम सब भी सहयोगी बन सकते हैं। हम वर्षाजल को यूँ ही बह जाने देने के बजाय उसे भूगर्भ में उतारने के प्रयास कर सकते हैं। **विस्तृत जानकारी के लिए पढ़ें प्रज्ञा अभियान 16 जून 2018 का सम्पादकीय पृष्ठ 2**

घर की छत के जल को कुएँ, हैण्डपम्प, बोरवेल के माध्यम से भूगर्भ में उतारना आसान है। वर्षा जल को उन तक पहुँचाने के बीच एक टंकी या फिल्टर लगाने की आवश्यकता होती है ताकि छनकर स्वच्छ पानी ही जमीन में जाये, गंदगी कोई अवरोध न पैदा करे। निकटवर्ती तकनीशियन का सहयोग लेकर यह कार्य जरूर करें। यह कार्य मँहगा नहीं है।

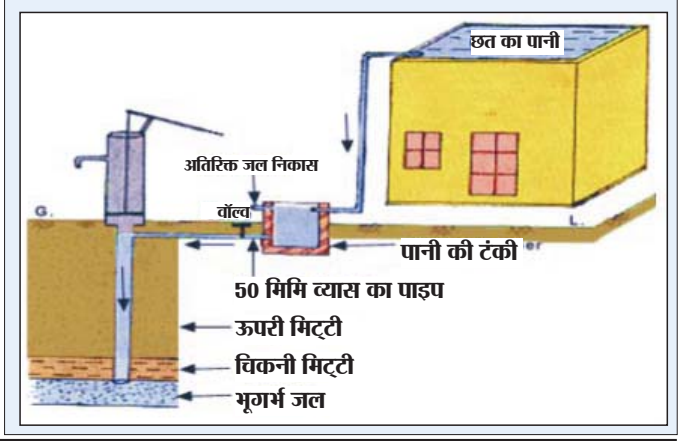

सेमीनार

225 बहिनें लाभान्वित

जबलपुर। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ जबलपुर ने 14 मई को गर्भ संस्कार की महत्ता और विधि-व्यवस्था का प्रतिपादन करने के लिए सेमीनार एवं प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया। स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. अमिता सक्सेना, डॉ. सोनल रिछारियाँ एवं डॉ. वचन शर्मा ने प्रतिभागी 225 बहिनों का मार्गदर्शन किया। उन्होंने गर्भावस्था में शिशु की मानसिकता पर पड़ने वाले प्रभावों की चर्चा की। गर्भिणी के आहार, विहार, व्यवहार, विचार, व्यायाम में रखी जाने वाली सावधानियों की जानकारी दी। विशेषज्ञों ने बताया कि गर्भावस्था शिशु के व्यक्तित्व की बुनियाद रखने का महत्त्वपूर्ण समय है, इसकी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए।

प्रशिक्षण एवं संस्कार का नियमित क्रम

जमशेदपुर। झारखंड

गायत्री चेतना केन्द्र भालूबासा में नवयुग दल ने 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' कार्यक्रम आयोजित किया। इसके अन्तर्गत श्रीमती डालिया भट्टाचार्जी एवं श्रीमती रूबी शर्मा ने पावर पॉइण्ट प्रेज़ेण्टेशन के सहारे गर्भकाल में बच्चे के मन और स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों की जानकारी दी। उन्होंने बच्चों को संस्कारवान के लिए ऋषियों के अनुसंधान-पुंसवन संस्कार को अपनाने की प्रेरणा दी, 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' पुस्तक घर-घर पहुँचाने का आग्रह किया।

इस प्रकार का प्रशिक्षण शिविर प्रत्येक गायत्री शक्तिपीठ में आयोजित करने और शक्तिपीठ गोलपहाड़ी पर पुंसवन संस्कार का निःशुल्क नियमित क्रम आरंभ करने का निर्णय लिया। शिविर की सफलता में श्रीमती विन्दी प्रसाद, अंजलि चौरसीया, वीना देवी, गिरिजा देवी, सारन्धा देवी, मीना देवी, अनिता देवी, मोनिका सिंह, रीता प्रसाद, गीता देवी, प्रतिमा शर्मा का सराहनीय योगदान रहा।

प्रोजेक्टर से चल रहा प्रशिक्षण

उत्तर ज़ोन की सक्रियता का लक्ष्य निर्धारित

पावन जन्मभूमि आँवलखेड़ा में आयोजित जोनल कार्यशाला में लिए संकल्प

इस वर्ष उत्तर ज़ोन ने शक्ति संवर्धन वर्ष-2018 को ध्यान में रखते हुए व्यापक जनसंपर्क और सक्रियता के संघबद्ध लक्ष्य सुनिश्चित कर लिए हैं, जिनमें से कुछ यहाँ बॉक्स में दिये जा रहे हैं। इस आशय का निर्णय दिनांक 28 एवं 29 मई को पावन जन्मभूमि आँवलखेड़ा के दिव्य वातावरण में आयोजित ज़ोनल समन्वयकों की विशेष बैठक में लिया गया।

प्रादेशिक कार्ययोजना का लक्ष्य और स्वरूप निर्धारित करने के लिए यह बैठक शांतिकुंज के वरिष्ठ चिंतक श्रद्धेय श्री वीरेश्वर उपाध्याय, जोन समन्वयक श्री कालीचरण शर्मा जी, उत्तर ज़ोन समन्वयक श्री रामयश तिवारी की मुख्य उपस्थिति में आयोजित हुई। चारों क्षेत्रीय ज़ोनल केन्द्रों के समन्वयक, सभी 17 उपज़ोनों के समन्वयक, स्थानीय उपज़ोन प्रतिनिधि इस बैठक में उपस्थित रहे।

श्रद्धेय श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी ने 'आध्यात्मिक समन्वयन का स्वरूप' विषय स्पष्ट करते हुए कहा कि अध्यात्म आस्था का विषय है। अपने इष्ट द्वारा बताये कार्यों के प्रति अथाह समर्पण, अपनी सक्रियता का श्रेय अपने इष्ट को अर्पण, बड़ों का सम्मान-

शक्ति संवर्धन वर्ष के संकल्प

- 24,000 ग्रामतीर्थ प्रव्रज्या
- 5,000 मण्डलों को सक्रिय करना
- 5,000 नये मण्डलों का गठन
- 1,000 गंगा मण्डलों की स्थापना
- 1,000 नयी बाल संस्कार शालाएँ
- 24,000 दहेज रहित आदर्श विवाह
- 50 लाख वृक्षारोपण

छोटों को प्यार-प्रोत्साहन, तप, उदारता, त्याग जैसे सूत्रों से ही आध्यात्मिक संगठन सधता है, समन्वय हो पाता है। उन्होंने कहा कि संगठन के भरपूर सूत्र गुरुदेव ने हमें दिये हैं, उनका नित्य चिंतन और निष्ठापूर्वक पालन ही हमारी सफलता की कुंजी है।

श्री कालीचरण शर्मा जी ने शक्ति संवर्धन का आधार व्यापक जनसंपर्क और साधना को बताया। उन्होंने कहा कि हमें लोगों को अपना बनाने और उनकी शक्ति-सामर्थ्य का नियोजन युग निर्माण आन्दोलन को गति देने में करने की कला विकसित करनी होगी। श्री शर्मा जी ने अपने उद्‌बोधन में लक्ष्य के चयन और उसकी पूर्ति के लिए आधारभूत सिद्धांतों की विस्तृत व्याख्या की।

श्री रामयश तिवारी ने क्षेत्र की प्रतिभा और क्षमता से अवगत कराने और जामवंत की भूमिका निभाते हुए इस वर्ष के संकल्प निर्धारित करने में अग्रणी भूमिका निभाई।

उत्तर ज़ोन के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता सर्वश्री योगेश शर्मा, बृजकिशोर त्रिभुवन, राजेन्द्र यदुवंशी, उमाशंकर डबराल, संतोष देवांगन और क्षेत्रीय ज़ोन समन्वयक सर्वश्री रामकेवल यादव, अयोध्या प्रसाद यादव, प्रभाशंकर दुबे, प्रसेन सिंह आदि की उपस्थिति में अनेक विषयों पर गहन मंथन हुआ, तद्नुसार उत्कृष्ट संकल्प उभरे।

ज़ोन-उपज़ोन समन्वयकों की सहमति से बनेंगी योजनाएँ

शांतिकुंज ने शक्ति संवर्धन वर्ष-2018 में अलग-अलग ज़ोनों की कार्ययोजना उन ज़ोन-उपज़ोनों के समन्वयकों की उपस्थिति में उनसे चर्चा करते हुए उनकी स्थिति-परिस्थिति के अनुरूप बनाने का निर्णय लिया है। उत्तर ज़ोन की यह गोष्ठी इसी दृष्टि से जन्मभूमि आँवलखेड़ा में आयोजित की गई थी।

आँवलखेड़ा में उत्तर ज़ोन समन्वयकों की गोष्ठी को संबोधित करते शांतिकुंज प्रतिनिधि

शांतिकुंज में रक्तदान शिविर

250 यूनिट रक्तदान हुआ

शांतिकुंज के शताब्दी चिकित्सालय में चल रहा रक्तदान शिविर

शांतिकुंज के आचार्य श्रीराम शर्मा शताब्दी चिकित्सालय में 6 जून को विशाल रक्तदान शिविर सम्पन्न हुआ। प्रातः से सायं तक रक्तदान करने वालों की भीड़ लगी रही। 350 से अधिक लोगों ने अपना पंजीयन कराया। इनमें अवयस्क किशोर भी थे, जिन्हें रक्तदान के नियमों की जानकारी देते हुए वयस्क होने तक प्रतीक्षा करने को कहा गया। लगभग 250 लोगों ने रक्तदान किया।

शिविर की इस शानदार सफलता पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने रक्तदान को परोक्ष रूप से जीवनदान जैसा ही कार्य बताया। उन्होंने कहा कि जिनमें पीड़ित मानवता के प्रति सेवा-संवेदना का भाव है, वही सच्चा ईश्वरभक्त है। इस दृष्टिकोण से रक्तदान ईश्वर की सच्ची आराधना है।

श्रद्धेय डॉ. साहब ने कहा कि रक्तदान दूसरों के लिए ही नहीं, अपितु रक्तदाता के लिए भी लाभदायक होता है। इससे नई रक्त कोशिकाओं का निर्माण होता है। लीवर और पेनक्रियाज़ पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

रक्तदान परोक्ष रूप से जीवनदान है, ईश्वर की सच्ची आराधना है।
• डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

समय-समय पर रक्तदान करते रहने से कई गंभीर बीमारियों के खतरे कम हो जाते हैं।

शिविर का शुभारंभ शांतिकुंज व्यवस्थापक श्री शिवप्रसाद मिश्र, चिकित्सालय प्रभारी डॉ. मंजू चोपदार, डॉ. गायत्री शर्मा द्वारा गुरुसत्ताओं की प्रतिमाओं के समक्ष दीप प्रज्वलन और मानवमात्र के कल्याण की प्रार्थना के साथ हुआ। हिमालयन हॉस्पिटल, जॉलीग्रांट से आयी डॉ. उर्वी, डॉ. दीपिका, डॉ. गरिमा एवं सहयोगियों की टीम के सहयोग से यह शिविर सम्पन्न हुआ। एकत्रित रक्त को इसी अस्पताल को प्रदान कर दिया गया।

शांतिकुंज के अंतेवासी कार्यकर्त्ताओं के अलावा कई प्रांतों से आये परिजनों ने रक्तदान किया। पहली बार रक्तदान करने वालों के चेहरों पर आत्मगौरव, आनंद की अनुभूति अलग ही झलक रही थी।

देसंविवि के शोधार्थी विद्यार्थी को मिला 'स्वच्छ गंगा राष्ट्रीय मिशन' का राष्ट्रीय पुरस्कार

वेदप्रकाश थावाईत का राष्ट्रीय फोटोग्राफी प्रतियोगिता में शीर्ष दस विजेताओं में हुआ चयन

श्री नितिन गडकरी, माननीय मंत्री जल संसाधन, नदी विकास और गंगा कायाकल्प, भारत सरकार ने 12 जून को अशोका होटेल, नई दिल्ली में आयोजित स्वच्छ गंगा राष्ट्रीय मिशन के एक कार्यक्रम में देसंविवि के शोधार्थी छात्र वेदप्रकाश थवाईत को प्रमाण पत्र तथा ₹ 5000/- प्रदान कर सम्मानित किया। उन्हें यह पुरस्कार स्वच्छ गंगा राष्ट्रीय मिशन द्वारा गंगा स्वच्छता पखवाड़ा-2018 के अंतर्गत आयोजित सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर नमामि गंगे राष्ट्रीय फोटो प्रतियोगिता में उनकी प्रविष्टि को श्रेष्ठ 10 विजेताओं में शामिल किए जाने पर दिया गया है।

प्रतियोगिता में कुल 1900 प्रविष्टियाँ शामिल हुईं। वेद प्रकाश थवाईत ने हर की पैड़ी का विहंगम दृश्य भेजा था जो गंगा मैय्या के प्रति लोगों की आस्था को बढ़ाने में अत्यंत प्रभावशाली था। कार्यक्रम के समय श्रेष्ठ फोटोग्राफ्स की प्रदर्शनी भी लगाई गई थी।

वेदप्रकाश ने इस अवसर का सदुपयोग करते हुए वहाँ उपस्थित अधिकारी-प्रतिभागियों को गायत्री परिवार द्वारा चलाए जा रहे गंगा स्वच्छता अभियान की जानकारी दी।

रक्तदान का बना कीर्तिमान

भीषण गर्मी में रक्तदाताओं में था गज़ब का उत्साह
480 यूनिट रक्तदान हुआ

केलवाड़ा, बाराँ। राजस्थान

दिया, बाराँ द्वारा निर्मित हाडोती ब्लड डोनर सोसाइटी और गायत्री परिवार के आह्वान पर गायत्री शक्तिपीठ सीताबाड़ी पर 3 जून 2018 को रक्तदान शिविर आयोजित हुआ। इसमें केलवाड़ा ग्रामवासीयों के विशेष सहयोग से रक्तदान का एक नया कीर्तिमान रचा गया। भीषण गर्मी में रक्तदाताओं ने गजब का उत्साह दिखाते हुए 480 यूनिट रक्तदान किया। रक्तदान करने के लिए आने वालों का क्रम सुबह से शाम तक अनवरत चलता रहा।

शिविर के आरंभ में पुलिस थाना केलवाडा के प्रभारी ने अपने स्टाफ से रक्तदान करवाया। गायत्री परिवार के 'दिया' से जुड़े युवाओं और महिलाओं ने भी बढ़-चढ़कर रक्तदान किया।

इस शिविर की सफलता के लिए परिजनों ने अथक परिश्रम किया। वे 10 दिनों तक प्रचार-प्रसार एवं जनसंपर्क अभियान में जुटे रहे। इसी का परिणाम था कि भीषण गर्मी में भी इतना अधिक रक्तदान हुआ।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में गायत्री परिवार का विशिष्ट योगदान

देहरादून में आयोजित हो रहे राष्ट्रीय समारोह में शांतिकुंज, देव संस्कृति विश्वविद्यालय एवं गायत्री परिवार के 3000 लोग भाग लेंगे

उत्तराखंड प्रशासन की ओर से इस वर्ष देहरादून के एफआरआई मैदान में प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी की मुख्य उपस्थिति में आयोजित हो रहे अंतराष्ट्रीय योग दिवस के राष्ट्रीय कार्यक्रम में गायत्री परिवार को विशेष दायित्व सौंपे गए हैं। शांतिकुंज, देव संस्कृति विश्वविद्यालय एवं आसपास के क्षेत्र के 3000 प्रशिक्षित युवक-युवतियाँ इसमें भाग लेंगे। शांतिकुंज ने बिजनौर, मेरठ, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर आदि में विशेष प्रशिक्षण शिविर लगाकर इन्हें योग दिवस के राष्ट्रीय मानक के अनुरूप योगाभ्यास की भलीभाँति तैयारियाँ कराई हैं।

देशव्यापी कार्यक्रम

अपने देश में गायत्री परिवार की प्रायः संगठित इकाइयाँ, विशेषकर युवा संगठन अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को पूरे उत्साह के साथ मनाते हैं। इस वर्ष के कार्यक्रमों में देसंविवि के परिवीक्षाधीन विद्यार्थियों का विशेष योगदान होगा। ऐसी लगभग 80 टोलियाँ विभिन्न क्षेत्रों में प्रव्रज्या कर रही हैं, जिन्होंने समाचार लिखे जाने तक अपने-अपने क्षेत्र में बड़े-बडे कार्यक्रमों के आयोजन की तैयारियाँ कर ली हैं।

अंतर्राष्ट्रीय योगदान

अमेरिका में आयोजित हो रही अंतर्राष्ट्रीय योग कॉन्फ्रेंस में भारत का प्रतिनिधित्व : इस वर्ष भारत सरकार द्वारा न्यूयॉर्क में पहली अंतर्राष्ट्रीय योग कॉन्फ्रेंस आयोजित की जा रही है। देव संस्कृति विवि. के योग विभागाध्यक्ष डॉ. सुरेश वर्णवाल, डॉ. राकेश वर्मा और डॉ. भारद्वाज इस कॉन्फ्रेंस में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे।

विदेशों में आयोजन : देव संस्कृति विवि. के प्राध्यापक डॉ. सुनील कुमार चीन में योग दिवस के कार्यक्रम के लिए प्रशिक्षण देने गये हैं। इसके अलावा सिंगापुर, वियेतनाम, ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका के न्यूयॉर्क, न्यूजर्सी, मॉरिशस, कतर आदि देशों में भी गायत्री परिवार की शाखाएँ विशाल कार्यक्रमों का आयोजन कर रही हैं।

अयोध्या में संजीवनी साधना सत्र सम्पन्न

अयोध्या, फैज़ाबाद (उत्तर प्रदेश)

विश्व प्रसिद्ध तीर्थ अयोध्या स्थित गायत्री शक्तिपीठ, रामकोट पर 1 से 9 जून की तारीखों में 9 दिवसीय संजीवनी साधना शिविर सम्पन्न हुआ। गुजरात, उत्तर प्रदेश और बिहार से आये 24 साधकों ने इसमें भाग लिया। जोन समन्वयक श्री अयोध्या प्रसाद यादव के अनुसार डॉ. एस.बी. सिंह, श्रीमती नीलम मिश्रा, श्री अमरनाथ पाण्डेय आदि ने प्रशिक्षण में अग्रणी सहयोग दिया।

देवदर्शन के लिए प्रस्थान करते साधक

यूनेस्को और राष्ट्रमण्डल में बढ़ता देव संस्कृति विश्वविद्यालय का प्रभाव

अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रतिनिधि एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति मई 2018 में यूके और बेल्जियम के प्रवास पर थे। उनका यह प्रवास युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के संकल्पों के अनुरूप देव संस्कृति की गौरव-गरिमा को वैश्विक विस्तार करने वाला था। अनेक प्रतिष्ठित संस्थानों के साथ उनकी वार्ताएँ हुईं, यूनेस्को और कॉमनवेल्थ जैसे विश्व संगठनों में देव संस्कृति विश्वविद्यालय एवं गायत्री परिवार की साझेदारी बढ़ी।

यूनेस्को ने देव संस्कृति विश्वविद्यालय को चेअर पोज़िशन प्रदान की

अनेक विषयों पर साझा कार्यक्रम चलाने के लिए हुई वार्ता

यूनेस्को के निदेशक के साथ देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की वार्ता हुई। यूनेस्को द्वारा पोलैण्ड के ओपेले विश्वविद्यालय के साथ देव संस्कृति विश्वविद्यालय को संयुक्त चेयरशिप प्रदान की गई।

निदेशक महाशय के साथ 'सांस्कृतिक विरासत अथवा अंतर सांस्कृतिक पर्यटन' के क्षेत्र में यूनेस्को और देव संस्कृति विश्वविद्यालय के एक साझा कार्यक्रम को आयोजित करने पर चर्चा भी हुई। 'यूनेस्को की युवा परियोजना-MED' भी दोनों के बीच चर्चा का प्रमुख विषय रहा। इस प्रोजेक्ट के माध्यम से देव संस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को यूनेस्को के सद्भावना राजदूत के रूप में नियुक्त किया जा सकेगा।

बेल्जियम प्रवास

यूरोपियन इंस्टीट्यूट ऑफ एशियन स्टडीज़ के साथ समन्वय हुआ

बेल्जियम में अनेक विश्वविद्यालयों के साथ बैठकें हुईं। इनमें से यूरोपियन इंस्टीट्यूट ऑफ एशियन स्टडीज़ के साथ हुई चर्चा विशेष उपलब्धिपूर्ण रही। यह एशिया और संबंधित मामलों पर विशिष्ट रूप से अध्ययन करने वाला, यूरोपीय यूनियन से अनुदान प्राप्त शिक्षा संस्थान है। डॉ. चिन्मय जी की वहाँ के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) से मुलाकात हुई। वे यूरोपीय शिक्षा जगत के एक अत्यंत प्रभावशाली व्यक्ति हैं। वे भारतीय शिक्षण संस्थानों को अपने अनुदान प्रदान करते हुए अध्ययन के साझा कार्यक्रम चलाने के लिए बहुत दिनों से प्रयत्न शील थे। अतः देव संस्कृति विश्वविद्यालय की पहल से वे बहुत खुश नज़र आये।

डॉ. चिन्मय जी ने उन्हें देव संस्कृति विश्वविद्यालय की प्रकृति, विचारधारा और विश्व में नैतिकता एवं शांति संवर्धन के लिए किये जा रहे प्रयासों की जानकारी दी। परम पूज्य गुरुदेव के विचार और वैज्ञानिक अध्यात्मवाद की अवधारणा ने उन्हें बहुत प्रभावित किया। परस्पर मिलकर कार्य करने के लिए वे उत्साहित हुए। देव संस्कृति के वैश्विक विस्तार में एक नये अध्याय का शुभारंभ हुआ।

हंगरी के विश्वप्रसिद्ध विश्वविद्यालयों, शिक्षण संस्थानों के साथ सम्बन्ध स्थापित हुए

बुडापेस्ट मेट्रोपोलिटन यूनिवर्सिटी में अध्ययन के लिए जा सकेंगे एनीमेशन संकाय के विद्यार्थी

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति जी की बुडापेस्ट मेट्रोपोलिटन यूनिवर्सिटी के वाइस रेक्टर प्रोफेसर आर्पद के साथ मुलाकात हुई। इसमें बुडापेस्ट मेट्रोपोलिटन यूनिवर्सिटी एवं देव संस्कृति विश्वविद्याल के बीच एनिमेशन विभाग के बैचलर कोर्स के विद्यार्थियों के लिए सिमिस्टर प्रोग्राम आरंभ करने पर सहमति बनी। इसके अंतर्गत देसंविवि के एनीमेशन पाठ्यक्रम के विद्यार्थी एक सिमेस्टर अध्ययन के लिए बुडापेस्ट जा सकेंगे और उसी तरह बुडापेस्ट मेट्रोपोलिटन यूनिवर्सिटी के एनीमेशन पाठ्यक्रम के विद्यार्थी देसंविवि आयेंगे।

जहाँ से निकले हैं ऑस्कर विजेता कलाकार

बुडापेस्ट मेट्रोपोलिटन यूनिवर्सिटी की मीडिया, दूर संचार और पर्यटन में विशेषज्ञता है। उनके अनेक विद्यार्थी हॉलीवुड फिल्मों में काम कर रहे हैं और कइयों ने ऑस्कर पुरस्कार भी पाये हैं।

इवोव्स लॉरेंड विश्वविद्यालय के साथ स्कॉलरशिप की योजना बनी

बुडापेस्ट की सबसे बड़ी यूनिवर्सिटी ईएलटीई (Eötvös Loránd University) भारतीय भाषाओं से संबंधित कार्यक्रम चलाती है। वहाँ के अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के निदेशक के साथ चर्चा हुई। उन्होने देव संस्कृति विवि. के साथ मिलकर 'स्टुपेडिकोन' नाम से एक स्कॉलरशिप आरंभ करने की योजना बनाई है, जिसके अंतर्गत विद्यार्थी अपने प्रवास, आवास का खर्च वहन करेंगे। इसके अलावा उन्हें 200 यूरो प्रतिमाह आजीविका भत्ता भी मिलेगा।

एक महान संगीत अकादमी लिज्त एकेडमी ऑफ म्यूजिक, बुडापेस्ट के साथ संबंध स्थापित हुए

लिज्त एकेडमी ऑफ म्यूज़िक, बुडापेस्ट यूरोप की सुप्रसिद्ध संगीत अकादमियों में से एक है, जिसकी स्थापना जानेमाने संगीतज्ञ लिज्त ने की है। मोज़ार्ट, बाच और बीथोवेन जैसे महान संगीतकार यहाँ पढ़े हैं अथवा यहाँ उन्होंने अपनी कला का प्रदर्शन किया है। इस अकादमी की इमारत विश्व विरासत मानी जाती है, जिसमें अभ्यास के लिए बने सभागार की क्षमता ही 1400 लोगों की है।

डॉ. चिन्मय जी और लिज्त एकेडमी ऑफ म्यूज़िक के उपाध्यक्ष के बीच वार्ता हुई। अकादमी की एक अंतर्राष्ट्रीय मामलों की टीम भी चर्चा में शामिल हुई। वे संगीत के क्षेत्र में परस्पर सहयोग के लिए चर्चा को आगे भी जारी रखने के लिए सहमत हुए। दोनों ओर से इस आशय के सहमति पत्र पर हस्ताक्षर हुए। उपाध्यक्ष महोदय का कहना था कि हंगरी की संसद और शिक्षामंत्री से इसके लिए अनुमति लेने की प्रक्रिया आरंभ कर दी गई है। उनका अनुमोदन मिलते ही परस्पर सहयोग के औपचारिक दस्तावेज़ों पर हस्ताक्षर किए जायेंगे। शांतिकुंज प्रतिनिधि के अनुसार मात्र 24 घंटे में ही यह सफलता परम पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद से ही संभव है। यह एमओयू गायत्री विद्यापीठ के लिए भी लाभदायक होगा।

हंगरी के राजदूत और यूनेस्को के महासचिव से मिले

संयुक्त राष्ट्रसंघ में हंगरी के राजदूत और हंगरी में यूनेस्को के महासचिव से मुलाकात हुई। दोनों ही डॉक्टर हैं। चिकित्सा क्षेत्र के बाद उन्होंने सांस्कृतिक क्षेत्र को चुना। अतः देव संस्कृति विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक क्षेत्र में वे बड़े सहयोगी रहे।

कॉमनवैल्थ की प्रमुख बैरोनेस स्कॉटलैण्ड की आत्मीयता

स्वयं मिलने आयीं, गायत्री परिवार-देसंविवि की भागीदारी पर चर्चा हुई

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में बना बैग बैरोनेस स्कॉटलैण्ड को भेंट कर उन्हें सम्मानित करते डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

माननीया पैट्रिसिया जेनेट, बैरोनेस स्कॉटलैण्ड, राष्ट्रमण्डल की महासचिव, जिन्हें महारानी के बाद द्वितीय दर्जे का सम्मान प्राप्त है, गायत्री परिवार के प्रतिनिधि से मिलने के लिए बहुत उत्सुक थीं। वे प्रातःकाल डॉ. चिन्मय जी से मिलने उनके स्थानीय निवास पर ही आ गयीं। उनके साथ लम्बी वार्ता हुई। गायत्री परिवार और देव संस्कृति विश्वविद्यालय कैसे राष्ट्रमंडल के साथ मिलकर किन-किन क्षेत्रों में कार्य कर सकते हैं, इस पर विचार-विमर्श हुआ।

53 देशों की सदस्यता वाला संगठन राष्ट्रमण्डल राष्ट्रसंघ के समान ही महत्त्व रखता है। बैरोनेस स्कॉटलैण्ड इसकी प्रमुख हैं। राष्ट्रमण्डल खेल, एसीयू और राष्ट्रमण्डल के विभिन्न विभाग उन्हीं के अधीनस्थ हैं। वे यूके और यूरोप की सर्वाधिक प्रभावशाली व्यक्तित्व हैं।

यूनिवर्सिटी ऑफ बर्मिंघम के साथ धार्मिक अध्ययन पर साझा कार्यक्रम

यूनिवर्सिटी ऑफ बर्मिंघम के कुलपति देव संस्कृति विश्वविद्यालय के साथ धार्मिक अध्ययन पर एक कार्यक्रम आरंभ करना चाहते हैं। उनकी देसंविवि के प्रतिकुलपति जी के साथ बैठक हुई। इसमें सेण्टर ऑफ रीकाउंसिलेशन के निदेशक भी उपस्थित थे, जिन्होंने डॉ. चिन्मय जी के पक्ष का भरपूर समर्थन किया।

स्टेनमोर में गायत्री यज्ञ

प्रवास के आरंभ में लंदन के उपनगर स्टेनमोर में गायत्री महायज्ञ का कार्यक्रम आयोजित हुआ। बड़ी संख्या में गायत्री परिजनों के अलावा स्थानीय पार्षद ने भी इसमें भाग लिया। 17 एकड़ का विशाल क्षेत्र होने के कारण परिजनों में परम वंदनीया माताजी के पदार्पण की रजत जयंती का कार्यक्रम 108 कुण्डीय यज्ञ के साथ इसी स्थान पर आयोजित करने का उत्साह है।

विश्वविद्यालयों का वैश्विक मूल्यांकन करने वाली संस्था का सहयोग मिला

ग्लोबल रैंकिंग हैडक्वार्टर्स के प्रमुखश्री से हुई चर्चा बड़ी महत्त्वपूर्ण थी। प्रतिकुलपति जी ने उन्हें देव संस्कृति विश्वविद्यालय के अभिनव प्रयासों और सामाजिक प्रभावों की जानकारी दी। वे अत्यंत प्रभावित हुए। उन्होंने अपने बोर्ड में इनकी चर्चा करने और अपनी मूल्यांकन प्रणाली से देव संस्कृति विश्वविद्यालय को लाभान्वित करने का आश्वासन दिया। वे देसंविवि की गुणवत्ता को वैश्विक दृष्टिकोण के अनुरूप बढ़ाने में भी सहयोग करेंगे।

विश्व को 14 नोबल पुरस्कार विजेता देने वाले शिक्षा केन्द्र यूनिवर्सिटी ऑफ ज्यूरिच, स्विटज़रलैण्ड के साथ संबंध स्थापित हुए

भारतीय विद्या पर कार्यक्रम चलाने की है योजना

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति जी स्विटजरलैण्ड की राजधारी ज्यूरिच पहुँचे। वहाँ यूनिवर्सिटी ऑफ ज्यूरिच के अधिकारियों के साथ उनकी बैठक हुई, जिसमें भारतीय विद्या पर कार्यक्रम चलाने पर चर्चा हुई।

यह वहाँ की अत्यंत गौरवशाली यूनिवर्सिटीज़ में से एक है, जिसने विश्व को अल्बर्ट आइंस्टीन सहित 14 नोबल पुरस्कार विजेता दिए हैं। वे देव संस्कृति विश्वविद्यालय के साथ भारतीय विद्या पर परस्पर सहयोग के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने के लिए विचार करने पर सहमत थे। प्रोफेसर मेलिनार अपने आगामी अक्टूबर में देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रवास के समय इस पर हस्ताक्षर करेंगे।

शांति के क्षेत्र में साझा कार्यक्रम

इससे पूर्व विदेश मंत्रालय, ज्यूरिच (सेंटर फॉर सीक्योरिटी स्टडीज़) के साथ मुलाकात हुई। वहाँ के निदेशक डॉ. उलमेन के साथ शांति के क्षेत्र में साझा कार्यक्रम बनाने पर चर्चा हुई।

फिनलैण्ड के पूर्व राष्ट्रपति से मुलाकात

फिनलैण्ड की राजधानी हेलसिंकी में वहाँ के पूर्व राष्ट्रपति से मुलाकात हुई। वे संयुक्त राष्ट्र संघ के शांति स्थापना कार्यक्रम में हमारे (देसंविवि एवं गायत्री परिवार) के सह सदस्य हैं। विएना की यात्रा के दौरान दोनों के संयुक्त राष्ट्र कंसोर्टियम (संघ) ऑफ पीसकीपर्स का सदस्य बनने के लिए हस्ताक्षर किए थे।

सीएमआई के नायब और कार्टर सेंटर में भूतपूर्व राष्ट्रपति कार्टर के नायब रहे श्री इटोण्डे काकोमा भी वहाँ उपस्थित थे। उनके साथ एमएफए से काटजा एल्फोर्स और पूर्व निदेशक के सलाहकार हाना क्लिंघे, विदेश मंत्री कार्यालय में मेडिटेशन ऑफिसर डेविड कोपरेला तथा अंतरसांस्कृतिक एवं अंतरधार्मिक मामलों के राजदूत पेक्का मेट्सो भी वहाँ थे।

यूनेस्को की चेअरशिप के दस्तावेज़ों पर हस्ताक्षर

इसी दिन गायत्री परिवार के प्रतिनिधि यूनिवर्सिटी ऑफ ओपेल, पोलैण्ड, जिसके साथ देव संस्कृति विश्वविद्यालय को संयुक्त रूप से यूनेस्को की संयुक्त चेअरशिप दी गई है, पहुँचे और परस्पर सहयोग के लिए आवश्यक दस्तावेज़ों में हस्ताक्षर किये।

एक असाधारण उपलब्धि

कॉमनवैल्थ ने भी देव संस्कृति विवि. के साथ सहयोग के दस्तावेज़ों पर हस्ताक्षर की इच्छा व्यक्त की। यह सचमुच असाधारण बात है क्योंकि सामान्यतः वे केवल राष्ट्राध्यक्षों के साथ ही सहयोग के दस्तावेज़ों पर हस्ताक्षर करते हैं। इस दृष्टि से यह देव संस्कृति विवि. के लिए बहुत ही गौरवशाली उपलब्धि है।

रेगा के रॉयल बॉटेनिकल गार्डन में यज्ञ करते स्थानीय गणमान्य

लात्विया की हलचल

राजधानी रेगा में संसद के प्रमुख मि. लेजिन्स के साथ बैठक हुई। उसके बाद यूनिवर्सिटी ऑफ लात्विया में व्याख्यान हुआ। तत्पश्चात रॉयल बॉटेनिकल गार्डन में यज्ञ किया, जिसमें बहुत से लोगों ने भाग लिया।

जीवन शैली बदलिए अथवा महाविनाश के लिए तैयार रहिए

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं अन्य वक्ताओं ने विश्व पर्यावरण दिवस पर पर्यावरण प्रदूषण के कारण वर्तमान स्थिति की भयावहता से अवगत कराया, चेताया और पर्यावरण संरक्षण के उपाय बताते हुए उनके पालन के संकल्प कराये

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी विश्व पर्यावरण दिवस पर आयोजित गोष्ठी को संबोधित करते हुए

धरती माँ की वेदना

समाज और राष्ट्र के नवनिर्माण के लिए पूरे मनोयोग से संकल्पित, समर्पित और सक्रिय युगतीर्थ शांतिकुंज में विश्व पर्यावरण दिवस पर अत्यंत महत्त्वपूर्ण विचार गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने की। इस अवसर पर दिया गया उनका अंतःकरण सिसकती धरती की व्यथा-वेदना ही अभिव्यक्त करता नज़र आया। उन्होंने कहा कि जिस धरती को हम अपनी माँ के रूप में पूजते हैं, उसे हमने अपनी सुविधा-अपने स्वार्थों के लिए कैंसर जैसी स्थिति में ला खड़ा कर दिया है।

श्रद्धेय डॉ. साहब ने कहा कि जिस मातृभूमि की रक्षा के लिए सिपाही अपना बलिदान तक दे देते हैं, उसी भाव के साथ हमें भी उसकी रक्षा के लिए अपने आप को बदलना पड़ेगा। हम अपनी जीवन शैली बदलें, परम पूज्य गुरुदेव के दिये सूत्र 'सादा जीवन, उच्च विचार' को अपनायें अन्यथा अपने ही कर्मों के दुष्परिणाम स्वरूप महाविनाश के लिए तैयार हो जायें।

हम प्रकृति के पुजारी हैं

श्रद्धेय डॉ. साहब ने कहा कि हम प्रकृति के पुजारी हैं। हमारे वेद और धर्मशास्त्रों में धरती, पंच तत्त्व, नदी, पहाड़, वृक्ष-वनस्पतियों सबको देव रूप में पूजा है। पर्यावरण दिवस मनाने का अर्थ है कि हमें उसी देवभाव के साथ हमें हिमालय, गंगा, समस्त नदियाँ, समस्त जल स्रोत, पहाड़, सागर को प्रदूषण से मुक्त करने में भरपूर योगदान देना है।

पर्यावरण संरक्षण के उपाय

श्रद्धेय डॉ. साहब ने पर्यावरण संरक्षण के लिए किए जाने वाले कार्यों का स्मरण कराया और विचार गोष्ठी के अंत में उन्हें दैनंदिन जीवन में अपनाने के संकल्प भी दिलाए। ये कार्य हैं-

- सादा जीवन, उच्च विचार की जीवन शैली अपनाएँ।
- बिजली का दुरुपयोग न होने दें।
- बेवजह पानी न बहने दें।
- वाहन चलाते समय लाल बत्ती पर अपना इंजन बंद कर दें।
- तेज आवाज से बचें।
- अधिकाधिक वृक्षारोपण करें।
- प्लास्टिक का उपयोग कम से कम करें

बीट प्लास्टिक : प्लास्टिक रहेगा या प्लेनेट

इस वर्ष के विश्व पर्यावरण दिवस का विषय 'बीट प्लास्टिक (प्लास्टिक को हराओ)' था। आरंभ में विषय की अवधारणा प्रस्तुत करते हुए श्री कालीचरण शर्मा जी ने और बाद में श्रद्धेय डॉ. साहब ने प्लास्टिक के कारण धरती के जीव-जंतुओं के अस्तित्व पर बढ़ते खतरों के भयावह आँकड़े प्रस्तुत किये। इस स्थिति से उबरने के उपाय भी बताये।

एक प्रतिष्ठित पत्रिका 'नेशनल ज्योग्रोफिक' के संदर्भ से श्रद्धेय डॉ. साहब ने कहा कि प्लास्टिक का प्रदूषण इतना भयावह है कि या तो प्लेनेट (ग्रह) जिंदा रहेगा या प्लास्टिक। उन्होंने प्लास्टिक से 100% मुक्त हो चुके देश फ्रांस, रवांडा, आईसलैण्ड और स्वीडन के उदाहरण देते हुए प्रश्न किया कि यदि ये प्लास्टिक मुक्त हो सकते हैं तो हम क्यों नहीं?

श्रद्धेय ने कहा कि पॉलीथीन गौमाता, व्हेल, बंदर, सियार आदि की मौतों का एक प्रमुख कारण है। प्लास्टिक की बोतल में रखा पानी गरम होने पर जहरीला होता जाता है। उन्होंने 'रिड्यूस, रीयूज़ और रीसाइकल' का सूत्र अपनाने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम का संचालन आन्दोलन प्रकोष्ठ प्रभारी श्री केदार प्रसाद दुबे ने किया। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण के लिए शांतिकुंज द्वारा चलाये जा रहे शत सूत्रीय कार्यक्रमों की जानकारी दी।

प्लास्टिक के खतरे

संगोष्ठी के आरंभ में श्री कालीचरण शर्मा जी ने पर्व की प्रस्तावना प्रस्तुत की। इस क्रम में उन्होंने आँखें खोल देने वाले कई आँकड़े प्रस्तुत किए। उन्होंने बताया कि प्लास्टिक की एक मिलीमीटर की परत को विघटित होने में 5000 वर्ष लगते हैं, अर्थात् वह कभी नष्ट नहीं होता।

हमारे देश में प्रतिवर्ष 25790 टन और अकेली दिल्ली में 608 टन प्लास्टिक का कचरा प्रतिवर्ष निकलता है।

ऑस्ट्रेलिया द्वीप जितने बड़े जैसे 3-4 डेड ज़ोन संसार में बन चुके हैं जहाँ प्लास्टिक के कारण समुद्री जीवों का अस्तित्व ही समाप्त हो गया है।

श्री कालीचरण जी ने पर्यावरण संरक्षण के कुछ व्यावहारिक सुझाव दिये। उन्होंने कहा कि हम गुलदस्ता नहीं, पेड़ की पौध भेंट करें। कचरा पॉलीथीन में भरकर न फैंकें। कपड़े की थैली में समान लेने की आदत डालें। प्लास्टिक को कभी जलाएँ नहीं।

वृक्षारोपण : विश्व पर्यावरण दिवस 2018 की स्मृति में श्रद्धेय डॉ. साहब ने उद्यान विभाग में एक चंदन का पेड़ रोपा।

वृक्ष प्रसाद : शांतिकुंज के उद्यान विभाग की ओर से पर्यावरण दिवस पर लोगों को निःशुल्क पौधे बाँटे गए।

डॉक्यूमेंटरी : कार्यक्रम के मध्य प्लास्टिक प्रदूषण से संबंधित एक लघु डॉक्यूमैंटरी दिखाई गई, जो लोगों को आने-अनजाने में हो रही एक महान भूल का अहसास कराने वाली थी।

सम्मान : पर्यावरण दिवस के मंच से जल संरक्षण के लिए कार्य कर रहे श्री योगेन्द्र गिरि और वृक्षारोपण का आदर्श प्रस्तुत कर रहे श्री मनोज तिवारी का विशेष रूप से स्मरण किया गया। दक्षिण भारत के श्री एस.के. सुब्बाराव एवं सतीष खंडेलवाल को भी याद किया गया।

गौरैया को बचाने के लिए : सहारनपुर के श्री विकास शर्मा गौरैया को बचाने के लिए जगह-जगह घोंसले लगा रहे हैं। श्रद्धेय डॉ. साहब एवं मंच पर विराजमान अन्य वरिष्ठजन सर्वश्री शिवप्रसाद मिश्र, केसरी कपिल जी, डॉ. बृजमोहन गौड़, डॉ. ओ.पी. शर्मा, श्री शरद पारधी जी ने इस अभियान को प्रोत्साहित किया।

साकार हो रही है दण्डकारण्य परियोजना

वनवासियों के उन्नयन के लिए श्रद्धा संवर्धन, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलम्बन की प्राथमिकता होगी

जिस भूमि पर भगवान राम ने 'निशिचर हीन करों महि ...' का संकल्प लिया और आगे चलकर रामराज्य की स्थापना की, उसी भूमि के निवासी वनवासियों पर युगऋषि 'श्रीराम' ने भी अपना भरपूर प्यार लुटाया है। उसी प्यार के वशीभूत बस्तर क्षेत्र के कार्यकर्त्ता आज रीछ-वानरों जैसी भूमिका निभा रहे हैं। अखण्ड दीप के समक्ष शांतिकुंज में बड़ी संख्या में शिविरार्थी इसी क्षेत्र के हैं। अखण्ड जप और परम वंदनीया माताजी का चौका 'माँ भगवती भोजनालय' मुख्य रूप से इसी क्षेत्र की बहिनें सँभालती हैं।

शांतिकुंज के परामर्श से युगऋषि के इन रीछ-वानरों ने अब पूरे दण्डकारण्य का कायाकल्प करने का मन बना लिया है। आतंक, धर्मान्तरण, अशिक्षा, अभाव, अंधविश्वास, नशा के चंगुल से निकालकर यहाँ के वनवासियों को स्वस्थ, शिक्षित, स्वावलम्बी बनाने की ठानी है।

दण्डकारण्य क्षेत्र में आने वाले छत्तीसगढ़ के सातों जिलों में आरण्यकों का निर्माण किया जा रहा है। वहाँ साधना, स्वास्थ्य, स्वावलम्बन, प्रशिक्षण औरश्रद्धा संवर्धन के विविध प्रकल्प आरंभ किये जा रहे हैं।

11 जनवरी को दण्डकारण्य परियोजना से जुड़े सातों जिलों के 45 प्रमुख परिजन श्री महाप्राण पुरोहित एवं जोन समन्वयक श्री दिलीप पाणिग्रही, युवा प्रकोष्ठ समन्वयक श्री ओमप्रकाश राठौर के नेतृत्व में शांतिकुंज आये। उनकी एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित हुई। श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के विशेष मार्गदर्शन के अलावा श्री केसरी कपिल जी, जोन प्रभारी श्री गंगाधर चौधरी एवं आन्दोलन प्रकोष्ठ प्रभारी श्री के.पी. दुबे जी से उन्हें विविध विषयों पर विशेष मार्गदर्शन मिला। श्री रामसहाय शुक्ला एवं श्री दयाशंकर शर्मा ने उन्हें योजना से संबंधित कानूनी पक्षों की जानकारी दी।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी दण्डकारण्य परियोजना से जुड़े अग्रदूतों को सम्बोधित करते हुए

श्रद्धेय डॉ. साहब ने कहा कि यह योजना मध्य प्रदेश और ओडिशा के वनवसी क्षेत्र के लिए पथ प्रदर्शक होगी।

- सभी जिलों में आरण्यक निर्माण के लिए भूमि दान में मिल गई है।
- इस योजना के लिए एक विशेष ट्रस्ट के गठन की प्रक्रिया शीघ्र ही पूरी हो जायेगी।
- शांतिकुंज में **'दण्डकारण्य प्रकोष्ठ'** की स्थापना हुई। इसका केन्द्रीय प्रभार जोन सहसमन्वयक श्री नेमूराम साहू को सौंपा गया। क्षेत्रीय स्तर पर श्री दिलीप पाणिग्रही के परामर्श से श्री ओमप्रकाश राठौर इसका कार्यभार देखेंगे।

अपने मिशन की गरिमा का ध्यान रखें
बिना पूर्व स्वीकृति के शांतिकुंज न आयें, न किसी को भेजें

अपने मिशन की बढ़ती गतिविधियाँ और लोकप्रियता के साथ शांतिकुंज आने वाले परिजनों की संख्या भी लगातार बढ़ रही है, लेकिन आवास व्यवस्था सीमित है। इस सीमा के अनुरूप ही शिविर या अन्य प्रयोजन के लिए यहाँ आने वाले परिजनों को पूर्व स्वीकृति प्रदान की जाती है।

प्रायः देखा जाता है कि विभिन्न शाखाएँ, शक्तिपीठें, परिजन बिना स्वीकृति प्राप्त लोगों को भी शांतिकुंज में ठहरने के लिए प्रेरित करते हैं, अनुशंसा पत्र देकर भेज देते हैं। इस प्रकार आने वाले लोगों को ढेरों असुविधाओं का सामना करना पड़ता है। उन्हें यहाँ आवास व्यवस्था नहीं मिल पाती अथवा जो मिलती है वो उनके अनुरूप नहीं होती। **यह स्थिति शांतिकुंज और भेजने वाले दोनों के लिए अनुचित है, अपयश प्रदान करने वाली है।**

परिजनों से अनुरोध है कि शांतिकुंज और अपने मिशन की गरिमा का पूरा-पूरा ध्यान रखें। शांतिकुंज से पूर्व स्वीकृति लिए बिना न तो स्वयं आयें और न ही किसी अन्य को भेजें। **जो लोग हरिद्वार-ऋषिकेश या चार धाम भ्रमण जैसे प्रयोजनों के लिए आते हैं, वे शांतिकुंज से बाहर अपनी आवास व्यवस्था करते हुए भी यहाँ की गतिविधियों में बिना किसी परेशानी के भाग ले सकते हैं।**

पूर्व स्वीकृति प्राप्त करने के लिए शिविर विभाग, शांतिकुंज को ई-मेल (shivir@awgp.in), पत्र, फैक्स से आवेदन भेजा जा सकता है। शिविर की स्वीकृति के लिए दो माह पूर्व आवेदन करें।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुंज हरिद्वार, स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) श्रीरामपुरम, गायत्री नगर, शान्तिकुंज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा अंबिका प्रिंटर्स एण्ड बाइंडर्स, 656क देहराखास, पटेल नगर, इंडस्ट्रिअल एरिया, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। **संपादक- वीरेश्वर उपाध्याय**
पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602 फैक्स-(01334) 260866
संपर्क सूत्र :- फोन-9258369725 (प्रातः 10 से सायं 5 बजे तक) email : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार संपादन : news@awgp.in एवं news.shantikunj@gmail.com

Publication date:
27.6.2018
Place:
Shantikunj, Haridwar.
RNI-NO.38653/ 80
Postel R.No.
UA/DO/DDN/ 16 / 2018-20